Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास जी विरचित

श्री रामचरित मानस से

सुन्दर काण्ड

सरल अनुवाद सहित

भाषाकार : ज्वाला प्रसाद शास्त्री

मूल्य : १०.०० रुपए

प्रकाशक—
बी०एस० प्रमिन्दर प्रकाशन
१ ए, इन्द्रा पार्क एक्सटेंशन,
चन्द्र नगर दिल्ली-५१

मुख्य वितरक—
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-२४६४०१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुख्य वितरक—
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार २४९४०१

मूल्य : १०.०० रुपए

मुद्रक :
बी० एस० प्रिंटर्स
चन्द्रनगर दिल्ली-५१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुन्दर काण्ड

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेय,
मनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं
वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं,
मायामनुष्यं हरिं ।
वन्देऽहं करुणाकरं,
रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥१॥

शान्त, सनातन, अप्रमेय (प्रमाणों से परे) निष्पाप, मोक्षरूप, परम शान्ति देने वाले, ब्रह्मा, शम्भु और शेषजी से निरन्तर सेवित, वेदान्त के द्वारा जानने योग्य, सर्व व्यापक, देवताओं में सबसे बड़े, माया से मनुष्य रूप में दीखने वाले, समस्त पापों को हरने वाले, करुणा की खान रघुकुल में श्रेष्ठ तथा राजाओं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के शिरोमणि, राम कहलाने वाले जगदीश्वर की मैं वन्दना करता हूं। १।

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्ति प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥२॥

हे रघुनाथ जी ! मैं सत्य कहता हूं और फिर आप सबके अन्तरात्मा ही हैं (सब जानते ही हैं) कि मेरे हृदय में दूसरी कोई इच्छा नहीं है। हे रघुकुल श्रेष्ठ ! मुझे अपनी निर्भरा (पूर्ण) भक्ति दीजिये और मेरे मन को काम आदि दोषों से रहित कीजिये। २।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥३॥

अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत (सुमेरु) के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्य रूपी वन को ध्वंस करने के लिये अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, श्रीरघु-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाथ जी के प्रिय भक्त पवन पुत्र श्रीहनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं । ३ ।

चौ०-जामवंत के वचन सुहाए ।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥१॥

जाम्बवान् के सुन्दर वचन सुनकर हनुमान जी के हृदय को बहुत ही भाये (वे बोले—) हे भाई ! तुमलोग दुःख सहकर, कन्द-मूल-फल खाकर तब तक मेरी राह देखना । १ ।

जब लगि आवौं सीतहि देखी ।
होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा ।
चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥२॥

जब तक मैं सीता जी को देखकर लौट न आऊँ । काम अवश्य होगा, क्योंकि मुझे बहुत ही हर्ष हो रहा है । यह कहकर और सबको मस्तक नवाकर तथा हृदय में श्री रघुनाथ जी को धारण करके हनुमान जी हर्षित होकर चले । २ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर॥
बार बार रघुबीर सँभारी।
तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥३॥

समुद्र के तीर पर एक सुन्दर पर्वत था। हनुमान जी खेल से ही (अनायास ही) कूद कर उसके ऊपर जा चढ़े और बार बार श्री रघुवीर जी का स्मरण करके अत्यन्त बलवान हनुमानजी उस पर से बड़े वेग से उछले। ३।

जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता।
चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना।
एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥४॥

जिस पर्वत पर हनुमान जी पैर रख कर चले (जिस पर से वे उछले) वह तुरन्त ही पाताल में धँस गया। जैसे श्री रघुनाथ जी का अमोघ बाण चलता है, उसी तरह हनुमान जी चले। ४।

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी।
तैं मैनाक होहि श्रम हारी ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समुद्र ने उन्हें श्री रघुनाथ जी का दूत समझकर मैनाक पर्वत से कहा कि हे मैनाक ! तू इनकी थकावट दूर करने वाला हो (अर्थात अपने ऊपर इन्हें विश्राम दे)। ५।

दो०-हनुमान तेहि परसा,
कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु,
मोहि कहाँ बिश्राम ॥१॥

हनुमान जी ने उसे हाथ से छू दिया, फिर प्रणाम करके कहा—भाई ! श्री रामचन्द्र जी का काम किए बिना मुझे विश्राम कहाँ। १।

चौ०-जात पवनसुत देवन्ह देखा।
जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता।
पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥१॥

देवताओं ने पवन पुत्र हनुमान को जाते हुए देखा, उनकी विशेष बल-बुद्धि को जानने के लिये (परीक्षार्थ) उन्होंने सुरसा नामक सर्पों की माता को भेजा, उस ने आकर हनुमान जी से यह बात कही। २।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।
सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥
राम काजु करि फिरि मैं आवौं ।
सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥२॥

आज देवताओं ने मुझे भोजन दिया है । यह वचन सुनकर पवनकुमार हनुमान जी ने कहा—श्री राम जी का कार्य करके मैं लौट आऊँ और सीता जी की खबर प्रभु को सुना दूँ । २ ।

तब तव बदन पैठिहउँ आई ।
सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना ।
ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥३॥

तब मैं आकर तुम्हारे मुँह में घुस जाऊँगा [तुम मुझे खा लेना] । हे माता ! मैं सत्य कहता हूं, अभी मुझे जाने दे । जब किसी भी उपाय से उसने जाने नहीं दिया, तब हनुमान जी ने कहा—तो फिर मुझे खा न ले । ३ ।

जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा ।
कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ ।
तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥४॥

उसने योजन भर (चार कोस में) मुँह फैलाया । तब हनुमान ने अपने शरीर को उससे दूना बढ़ा लिया । उसने सोलह योजन का मुख किया । हनुमान जी तुरन्त ही बत्तीस योजन के हो गये । ४ ।

जस जस सुरसा बदन बढ़ावा ।
तासु दून कपि रूप देखावा ॥
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा ।
अति लघु रूप पवन सुत लीन्हा ॥५॥

जैसे-जैसे सुरसा मुख का विस्तार बढ़ाती थी, हनुमान जी उसका दूना रूप दिखलाते थे । उसने सौ योजन (चार सौ कोस) का मुख किया । तब हनुमान जी ने बहुत छोटा सा रूप धारण कर लिया । ५ ।

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा ।
मांगा बिदा ताहि सिरु नावा ॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा ।
बुधि बल मरमु तोर मैं पावा ॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और वे उसके मुख में घुस कर [तुरन्त] फिर बाहर निकल आये और उसे सिर नवाकर विदा माँगने लगे। [उसने कहा] मैंने तुम्हारे बुद्धि बल का भेद पा लिया, जिसके लिये देवताओं ने मुझे भेजा था। ६।

दो०-राम काजु सबु करिहहु
　　तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि
　　चलेउ हनुमान ॥२॥

तुम श्री रामचन्द्र जी का सब कार्य करोगे, क्योंकि तुम बल बुद्धि के भण्डार हो। यह आशीर्वाद देकर वह चली गयी, तब हनुमान जी हर्षित होकर चले। २।

चौ०-निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई।
　　करि माया नभु के खग गहई॥
　　जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं।
　　जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं॥१॥

समुद्र में एक राक्षसी रहती थी। वह माया कर के आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को पकड़ लेती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकाश में जीव-जंतु उड़ा करते थे, वह जल में उन की परछाई देखकर। १।

गहइ छाँह सक सो न उड़ाई।
एहि विधि सदा गगनचर खाई॥
सोइ छल हनुमान कहँ कीन्हा।
तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा॥२॥

उस परछाई को पकड़ लेती थी, जिससे वे उड़ नहीं सकते थे [और जल में गिर पड़ते थे]। इस प्रकार वह सदा आकाश में उड़ने वाले जीवों को खाया करती थी। उसने वही छल हनुमान जी से भी किया। हनुमान जी ने तुरन्त ही उसका कपट पहचान लिया। २।

ताहि मारि मारुतसुत बीरा।
बारिधि पार गयउ मतिधीरा॥
तहां जाइ देखी बन सोभा।
गुंजत चंचरीक मधु लोभा॥३॥

पवन पुत्र धीर बुद्धि वीर श्री हनुमान जी उसको मार कर समुद्र के पार गये। वहाँ जाकर उन्होंने वन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की शोभा देखी। मधु (पुष्प रस) के लोभ से भौंरे गुंजार कर रहे थे। ३।

नाना तरु फल फूल सुहाए।
खग मृग बृंद देखि मन भाए॥
सैल बिसाल देखि एक आगें।
ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें॥४॥

अनेकों प्रकार के वृक्ष फल-फूल से शोभित हैं। पक्षी और पशुओं के समूह को देख कर तो वे मन में [बहुत ही] प्रसन्न हुए। सामने एक विशाल पर्वत देखकर हनुमान जी भय त्याग कर उस पर दौड़ कर जा चढ़े। ४।

उमा न कछु कपि कै अधिकाई।
प्रभु प्रताप जो कालहि खाई॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी।
कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी॥५॥

[शिवजी कहते हैं—] हे उमा! इसमें वानर हनुमान की कुछ बड़ाई नहीं है। यह प्रभु का प्रताप है, जो काल को भी खा जाता है। पर्वत पर चढ़ कर उन्होंने लंका देखी। बहुत ही बड़ा किला है, कुछ कहा नहीं जाता। ५।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अति उतंग जलनिधिचहुँ पासा।
कनक कोट कर परम प्रकासा ॥६॥

वह अत्यन्त ऊँचा है, उसके चारों ओर समुद्र है। सोने के परकोटे (चार दीवारी) का परम प्रकाश हो रहा है। ६।

छं०—कनक कोट बिचित्र मनि,
कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं,
चारु पुर बहु बिधि बना॥
गज बाजि खच्चर निकर पद्चर
रथ बरूथन्हि को गनै।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल,
सेन बरनत नहिं बनै॥१॥

विचित्र मणियों से जड़ा हुआ सोने का परकोटा है, उसके अन्दर बहुत से सुन्दर-सुन्दर घर हैं। चौराहे बाजार, सुन्दर मार्ग और गलियाँ हैं; सुन्दर नगर बहुत प्रकार से सजा हुआ है। हाथी, घोड़े, खच्चरों के समूह तथा पैदल और रथों के समूह को कौन गिन सकता है? अनेक रूपों के राक्षसों के दल हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनकी अत्यन्त बलवती सेना वर्णन करते नहीं बनती । १ ।

बन बाग उपबन बाटिका,
सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या,
रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल्ल देह बिसाल सैल,
समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि,
एक एकन्ह तर्जहीं ॥२॥

वन, बाग, उपवन (बगीचे), फुलवाड़ी, तालाब, कुएँ और बावडियाँ सुशोभित हैं । मनुष्य, नाग, देवताओं और गन्धर्वों की कन्याएँ अपने सौन्दर्य से मुनियों के भी मनों को मोह लेती हैं । कहीं पर्वत के समान विशाल शरीर वाले बड़े ही बलवान मल्ल (पहलवान) गरज रहे हैं । वे अनेकों अखाड़ों में बहुत प्रकार से भिड़ते और एक दूसरे को ललकारते हैं । २ ।

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट,
तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहुँ महिष मानुष धेनु खर,
अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास,
इन्ह की कथा कछु एक है कही ॥
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि,
त्यागि गति पैहहिं सही ॥३॥

भयंकर शरीर वाले करोड़ों योद्धा यत्न करके (बड़ी सावधानी से) नगर की चारों दिशाओं में (सब ओर से) रखवाली करते हैं। कहीं दुष्ट राक्षस भैंसों, मनुष्यों, गायों, गधों और बकरों को खा रहे हैं। तुलसीदासजी ने इनकी कथा इसीलिए कुछ थोड़ी सी कही है कि ये निश्चय ही श्री रामचन्द्र जी के बाण-रूपी तीर्थ में शरीरों को त्याग कर परम गति को पावेंगे। ३।

दो०–पुर रखवारे देखि बहु,
कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि,
नगर करौं पइसार ॥३॥

नगर के बहुसंख्यक रखवालों को देखकर हनुमान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी ने मन में विचार किया कि अत्यन्त छोटा सा रूप धरूँ और रात के समय नगरी में प्रवेश करूँ।३।

चौ०–मसक समान रूप कपि धरी।
लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी।
सो कह चलेसि मोहि निंदरी॥१॥

हनुमान जी ने मच्छर के समान (छोटा-सा) रूप धारण कर नररूप से लीला करने वाले भगवान श्री रामचन्द्र जी का स्मरण करके लंका को चले। (लंका के द्वार पर) लंकिनी नाम की राक्षसी रहती थी। वह बोली—मेरा निरादर करके (बिना मुझसे पूछे) कहाँ चला जा रहा है ?।१।

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा।
मोर अहार जहाँ लगि चोरा॥
मुठिका एक महा कपि हनी।
रुधिर बमत धरनी ढनमनी॥२॥

रे मूर्ख ! तूने मेरा भेद नहीं जाना ? जहाँ तक (जितने) चोर हैं, वे सब मेरे आहार हैं। महाकपि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान जी ने उसे एक घूँसा मारा, जिससे वह खून की उल्टी करती हुई पृथ्वी पर लुढ़क पड़ी । २ ।

पुनि संभारि उठी सो लंका ।
जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा ।
चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥३॥

वह लंकिनी फिर अपने को संभाल कर उठी और डर के मारे हाथ जोड़कर विनती करने लगी । (वह बोली—) रावण को जब ब्रह्मा जी ने वर दिया था, तब चलते समय उन्होंने मुझे राक्षस के विनाश की यह पहचान बता दी थी कि—। ३ ।

बिकल होसि तैं कपि कें मारे ।
तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहूता ।
देखेउँ नयन राम कर दूता ॥४॥

जब तू बन्दर के मारने ने व्याकुल हो जाय, तब तू राक्षसों का संहार हुआ जान लेना । हे तात ! मेरे बड़े पुण्य हैं, जो मैं श्री रामचन्द्र जी के दूत (आप) को नेत्रों से देख पायी । ४ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—तात स्वर्ग अपवर्ग सुख,
धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि,
जो सुख लव सतसंग ॥४॥

हे तात! स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाय, तो भी वे सब मिल कर (दूसरे पलड़े में रक्खे हुए) उस सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो लव (क्षण) मात्र के सतसङ्ग से होता है। ४।

चौ०—प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई॥१॥

अयोध्यापुरी के राजा श्री रघुनाथ जी को हृदय में रखे हुए नगर में प्रवेश करके सब काम कीजिए। उसके लिये विष अमृत हो जाता है शत्रु मित्रता करने लगते हैं, समुद्र गाय के खुरों के बराबर हो जाता है, अग्नि में शीतलता आ जाती है। १।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही।
राम कृपा करि चितवा जाही॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना।
बैठा नगर सुमिरि भगवाना॥२॥

और हे गरुड़ जी! सुमेरू पर्वत उसके लिए रज के समान हो जाता है, जिसे श्री रामचन्द्र जी ने एक बार कृपा करके देख लिया। तब हनुमान जी ने बहुत ही छोटा रूप धारण किया और भगवान का स्मरण करके नगर में प्रवेश किया। २।

मन्दिर मन्दिर प्रति करि सोधा।
देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥
गयउ दसानन मन्दिर माहीं।
अति बिचित्र कहि जातसो नाहीं॥३॥

उन्होंने एक-एक (प्रत्येक) महल की खोज की। जहाँ-तहाँ असंख्य योद्धा देखे। फिर वे रावण के महल में गए। वह अत्यन्त विचित्र था, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। ३।

सयन किएँ देखा कपि तेही।
मँदिर महुँ न दीखि बैदेही॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भवन एक पुनि दीख सुहावा।
हरि मँदिर तहँ भिन्न बनावा ॥४॥

हनुमान जी ने उस (रावण) को शयन किये देखा; परन्तु महल में जानकी जी नहीं दिखाई दीं। फिर उन्हें एक सुन्दर महल दिखाई दिया। (उस में) भगवान का एक अलग मन्दिर बना हुआ था। ४।

दो०–रामायुध अंकित गृह,
सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ,
देखि हरष कपिराइ ॥५॥

वह महल श्री राम जी के आयुध (धनुष-बाण) के चिन्हों से अंकित था, उसकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती। वहाँ नवीन-नवीन तुलसी के वृक्ष समूहों को देखकर कपिराज श्री हनुमान जी हर्षित हुए।५।

चौ०–लँका निसिचर निकर निवासा।
इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा।
तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लंका तो राक्षसों के समूह का निवास स्थान है। यहाँ सज्जन (साधु पुरुष) का निवास कहाँ ? हनुमान जी मन में इस प्रकार तर्क करने लगे। उसी समय विभीषण जी जागे। १।

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा।
हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी।
साधु ते होइ न कारज हानी॥२॥

उन्होंने (विभीषण ने) राम नाम का स्मरण (उच्चारण) किया। हनुमान जी ने उन्हें सज्जन जाना और हृदय में हर्षित हुए। [हनुमान जी ने विचार किया कि] इनसे हठ करके (अपनी ओर से ही) परिचय करूंगा; क्योंकि साधु से कार्य की हानि नहीं होती [प्रत्युत लाभ ही होता है]। २।

विप्र रूप धरि बचन सुनाए।
सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई।
बिप्र कहहु निज कथा बुझाई॥३॥

ब्राह्मण का रूप धरकर हनुमान जी ने उन्हें वचन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनाए (पुकारा) सुनते ही विभीषण जी उठकर वहाँ आये। प्रणाम करके कुशल पूछी और कहा कि— हे ब्राह्मणदेव! अपनी कथा समझाकर कहिए। ३।

की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई।
मोरें हृदय प्रीति अति होई॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी।
आयहु मोहि करन बड़भागी॥४॥

क्या आप हरि के भक्तों में से कोई हैं? क्योंकि आपको देख कर मेरे हृदय में अत्यन्त प्रेम उमड़ रहा है। अथवा क्या आप दीनों से प्रेम करने वाले स्वयं श्री रामचन्द्र ही हैं, जो मुझे बड़भागी बनाने (घर बैठे साक्षात दर्शन देकर कृतार्थ करने) आए हैं। ४।

दो०—तब हनुमंत कही सब,
राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन,
मगन सुमिरि गुन ग्राम॥६॥

तब हनुमान जी ने सारी कथा कह कर अपना नाम बताया। सुनते ही दोनों के शरीर पुलकित हो गये और श्री राम जी के गुण समूहों का स्मरण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके दोनों के मन [प्रेम और आनन्द में] मग्न हो गए। ६।

चौ०—सुनहु पवनसुत रहनि हमारी।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥१॥

[विभीषण जी ने कहा—] हे पवन पुत्र! मेरी रहनी सुनो! मैं यहाँ वैसे ही रहता हूं, जैसे दाँतों के बीच में बेचारी जीभ। हे तात! मुझे अनाथ जानकर सूर्य कुल के नाथ श्री रामचन्द्र जी क्या कभी मुझ पर कृपा करेंगे। १।

तामस तनु कछु साधन नाहीं।
प्रीति न पद सरोज मन माहीं॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता॥२॥

मेरा तामसी (राक्षस) शरीर होने से साधन तो कुछ बनता नहीं और न मन में श्री रामचन्द्रजी के चरण कमलों में प्रेम ही है। परन्तु हे हनुमान! अब मुझे विश्वास हो गया कि श्रीरामजी की मुझ पर कृपा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है; क्योंकि हरि की कृपा के बिना संत नहीं मिलते ॥२॥

जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा।
तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती।
करहिं सदा सेवक पर प्रीती॥३॥

अब श्री रघुवीर ने कृपा की है, तभी तो आपने मुझे हठ करके (अपनी ओर से) दर्शन दिये हैं। [हनुमान जी ने कहा—] हे विभीषण जी! सुनिये, प्रभु की यही रीति है कि वे सेवक पर सदा ही प्रेम किया करते हैं ॥३॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना।
कपि चंचल सबहीं बिधि हीना॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा।
तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥४॥

भला कहिये, मैं ही कौन बड़ा कुलीन हूं? [जाति का] चंचल वानर हूं और सब प्रकार से नीच हूं। प्रातःकाल जो हम लोगों (बंदरों) का नाम ले ले तो उस दिन उसे भोजन न मिले ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०–अस मैं अधम सखा,
सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन,
भरे बिलोचन नीर ॥७॥

हे सखा ! सुनिये, मैं ऐसा अधम हूं; पर श्री रामचन्द्रजी ने तो मुझ पर भी कृपा ही की है। भगवान के गुणों का स्मरण करके हनुमान जी के दोनों नेत्रों में [प्रेमाश्रुओं का] जल भर आया ॥७॥

चौ०–जानत हूँ अस स्वामि बिसारी।
फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा।
पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥१॥

जो जानते हुए भी ऐसे स्वामी (श्री रघुनाथजी) को भुलाकर [विषयों के पीछे] भटकते फिरते हैं, वे दुखी क्यों न हों ? इस प्रकार श्री रामजी के गुण-समूहों को कहते हुए उन्होंने अनिर्वचनीय (परम) शान्ति प्राप्त की ॥१॥

पुनि सब कथा बिभीषन कही।
जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है; क्योंकि हरि की कृपा के बिना संत नहीं मिलते ॥२॥

जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ।
तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु विभीषन प्रभु कै रीती ।
करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥३॥

अब श्री रघुवीर ने कृपा की है, तभी तो आपने मुझे हठ करके (अपनी ओर से) दर्शन दिये हैं। [हनुमान जी ने कहा—] हे विभीषण जी ! सुनिये, प्रभु की यही रीति है कि वे सेवक पर सदा ही प्रेम किया करते हैं ॥३॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना ।
कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ।
तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥४॥

भला कहिये, मैं ही कौन बड़ा कुलीन हूं ? [जाति का] चंचल वानर हूं और सब प्रकार से नीच हूं। प्रातःकाल जो हम लोगों (बंदरों) का नाम ले ले तो उस दिन उसे भोजन न मिले ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०–अस मैं अधम सखा,
सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन,
भरे बिलोचन नीर ॥७॥

हे सखा ! सुनिये, मैं ऐसा अधम हूं; पर श्री रामचन्द्रजी ने तो मुझ पर भी कृपा ही की है। भगवान के गुणों का स्मरण करके हनुमान जी के दोनों नेत्रों में [प्रेमाश्रुओं का] जल भर आया ॥७॥

चौ०–जानत हूँ अस स्वामि बिसारी।
फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा।
पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥१॥

जो जानते हुए भी ऐसे स्वामी (श्री रघुनाथजी) को भुलाकर [विषयों के पीछे] भटकते फिरते हैं, वे दुखी क्यों न हों ? इस प्रकार श्री रामजी के गुण-समूहों को कहते हुए उन्होंने अनिर्वचनीय (परम) शान्ति प्राप्त की ॥१॥

पुनि सब कथा बिभीषन कही।
जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता।
देखी चहउँ जानकी माता ॥२॥

फिर विभीषण जी ने, श्री जानकी जी जिस प्रकार वहाँ (लंका में) रहती थीं, वह सब कथा कही। तब हनुमान जी ने कहा—हे भाई ! सुनो, मैं जानकी माता को देखना चाहता हूं ॥२॥

जुगुति बिभीषण सकल सुनाई।
चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ।
बन असोक सीता रह जहवाँ ॥३॥

विभीषण जी ने [माता के दर्शन की] सब युक्तियाँ (उपाय) कह सुनायीं। तब हनुमान जी विदा लेकर चले। फिर वही (पहले का मसक-सरीखा) रूप धर कर वहाँ गये, जहाँ अशोक वन में (वन के जिस भाग में) सीता जी रहती थीं।

देखि मनहि महुं कीन्ह प्रनामा।
बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी।
जपति हृदयं रघुपति गुन श्रेनी ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता जी को देखकर हनुमान जी ने उन्हें मन ही में प्रणाम किया। उन्हें बैठे-ही-बैठे रात्रि के चारों पहर बीत जाते हैं। शरीर दुबला हो गया है, सिर पर जटाओं की एक वेणी (लट) है। हृदय में श्री रघुनाथ जी के गुण समूहों का जाप (स्मरण) करती रहती हैं ॥४॥

दो०—निज पद नयन दिएँ,
मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत,
देखि जानकी दीन ॥८॥

श्री जानकी जी नेत्रों को अपने चरणों में लगाये हुए हैं (नीचे की ओर देख रही हैं) और मन श्रीराम जी के चरण कमलों में लीन है। जानकी जी को दीन (दुखी) देखकर पवन पुत्र हनुमान जी बहुत ही दुखी हुए ॥८॥

चौ०—तरु पल्लव महुं रहा लुकाई।
करइ बिचार करौं का भाई॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा।
संग नारि बहु किएँ बनावा ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान जी वृक्ष के पत्तों में छिप रहे और विचार करने लगे कि हे भाई ! क्या करूँ (इनका दुःख कैसे दूर करूँ) ? उसी समय बहुत-सी स्त्रियों को साथ लिये सज-धजकर रावण वहाँ आया ॥१॥

बहु बिधि खल सीतहि समुझावा ।
साम दाम भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ।
मंदोदरी आदि सब रानी ॥२॥

उस दुष्ट ने सीता जी को बहुत प्रकार से समझाया । साम, दाम, भय और भेद दिखलाया । रावण ने कहा—हे सुमुखि ! हे सयानी ! सुनो ! मन्दोदरी आदि सब रानियों को—॥२॥

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही ।
सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥३॥

मैं तुम्हारी दासी बना दूँगा, यह मेरा प्रण है । तुम एक बार मेरी ओर देखो तो सही ! अपने परम स्नेही कोसलाधीश श्री रामचन्द्र जी का स्मरण करके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानकी जी तिनके की आड़ (परदा) करके कहने लगीं—॥३॥

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा।
कबहुं कि नलिनी करइ बिकासा॥
अस मन समुझु कहति जानकी।
खल सुधि नहिं रघुबीर बान की॥४॥

हे दशमुख! सुन, जुगनू के प्रकाश से कभी कमलिनी खिल सकती है? जानकी जी फिर कहती हैं—तू [अपने लिये भी] ऐसा ही मन में समझ ले। रे दुष्ट! तुझे श्री रघुवीर के बाण की खबर नहीं है॥४॥

सठ सूनें हरि आनेहि मोही।
अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥५॥

रे पापी! तू मुझे सूने में हर लाया है। रे अधम! निर्लज्ज! तुझे लज्जा नहीं आती?॥५॥

दो०—आपुहि, सुनि खद्योत सम,
रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि,
बोला अति खिसिआन॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने को जुगनू के समान और रामचन्द्र जी को सूर्य के समान सुनकर और सीता जी के कठोर वचनों को सुनकर रावण तलवार निकाल कर बड़े गुस्से में आकर बोला—॥९॥

चौ०—सीता तैं मम कृत अपमाना।
कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी।
सुमुखि होति न त जीवन हानी॥१॥

सीता! तूने मेरा अपमान किया है। मैं तेरा सिर इस कठोर कृपाण से काट डालूंगा। नहीं तो [अब भी] जल्दी मेरी बात मान ले। हे सुमुखि! नहीं तो जीवन से हाथ धोना पड़ेगा! ॥१॥

स्याम सरोज दाम सम सुन्दर।
प्रभु भुज करि सम कर दसकंधर॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा।
सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा॥२॥

[सीता जी ने कहा—] हे दशग्रीव! प्रभु की भुजा जो श्याम कमल की माला के समान सुन्दर और हाथी की सूंड के समान [पुष्ट तथा विशाल]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है या तो वह भुजा ही मेरे कण्ठ में पड़ेगी या तेरी भयानक तलवार ही। रे शठ ! सुन, यही मेरा सच्चा प्रण है ॥२॥

चंद्रहास हरु मम परितापं।
रघुपति बिरह अनल संजातं॥
सीतल निसित बहसि बर धारा।
कह सीता हरु मम दुख भारा॥३॥

सीता जी कहती हैं—हे चन्द्रहास (तलवार) ! श्री रघुनाथ जी के विरह की अग्नि से उत्पन्न मेरी बड़ी भारी जलन को तू हर ले, हे तलवार ! तू शीतल, तीव्र और श्रेष्ठ धारा बहाती है (अर्थात तेरी धार ठंडी और तेज है), तू मेरे दुःख के बोझ को हर ले ॥३॥

सुनत बचन पुनि मारन धावा।
मयतनयाँ कहि नीति बुझावा॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई।
सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई॥४॥

सीता जी के ये वचन सुनते ही वह मारने दौड़ा, तब मयदानव की पुत्री मन्दोदरी ने नीति कहकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसे समझाया। तब रावण ने सब राक्षसियों को बुला कर कहा कि जाकर सीता को बहुत प्रकार से भय दिखलाओ ॥४॥

मास दिवस महुँ कहा न माना।
तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥५॥

यदि महीने भर में यह कहा न माने तो मैं इसे तलवार निकाल कर मार डालूंगा ॥५॥

दो०—भवन गयउ दसकंधर,
इहाँ पिसाचिनि बृंद।
सीतहि त्रास देखावहिं,
धरहिं रूप बहु मंद ॥१०॥

[यों कहकर] रावण घर चला गया। यहाँ राक्षसियों के समूह बहुत से बुरे रूप धर कर सीताजी को भय दिखलाने लगे ॥१०॥

चौ०—त्रिजटा नाम राच्छसी एका।
राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना।
सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनमें एक त्रिजटा नाम की राक्षसी थी। उसकी श्री रामचन्द्र जी के चरणों में प्रीति थी और वह विवेक (ज्ञान) में निपुण थी। उसने सबों को बुलाकर अपना स्वप्न सुनाया और कहा—सीता जी की सेवा करके अपना कल्याण कर लो ॥१॥

सपनें बानर लंका जारी।
जातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥२॥

स्वप्न में (मैंने देखा) एक बन्दर ने लंका जला दी। राक्षसों की सारी सेना मार डाली गयी। रावण नंगा है और गदहे पर सवार है। उसके सिर मुंडे हुए हैं, बीसों भुजाएँ कटी हुई हैं ॥२॥

एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई।
लंका मनहुं बिभीषन पाई॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई।
तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥३॥

इस प्रकार से वह दक्षिण (यमपुरी की) दिशा को जा रहा है और मानो लंका विभीषण ने पायी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। नगर में श्री रामचन्द्र जी की दुहाई फिर गयी। तब प्रभु ने सीता जी को बुला भेजा ॥३॥

यह सपना मैं कहउँ पुकारी।
होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥
तासु वचन सुनि ते सब डरीं।
जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥४॥

मैं पुकारकर (निश्चय के) साथ कहती हूं कि यह स्वप्न चार (कुछ ही) दिनों बाद सत्य होकर रहेगा। उसके वचन सुनकर वे सब राक्षसियाँ डर गयीं और जानकी जी के चरणों पर गिर पड़ीं ॥४॥

दो०–जहँ तहँ गईं सकल तब
सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीते मोहि,
मारिहि निसिचर पोच ॥११॥

तब (इसके बाद) वे सब जहाँ-तहाँ चली गयीं। सीताजी मन में सोच करने लगीं कि एक महीना बीत जाने पर नीच राक्षस रावण मुझे मारेगा ॥११॥

चौ०–त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी।
मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तजौं देह करु बेगि उपाई।
दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥१॥

सीता जी हाथ जोड़कर त्रिजटा से बोलीं—हे
ता ! तू मेरी विपत्ति की संगिनी है। जल्दी कोई
ा उपाय कर जिससे मैं शरीर छोड़ सकूं। विरह
ह्य हो चला है, अब यह सहा नहीं जाता ॥१॥

आनि काठ रचु चिता बनाई।
मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी।
सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥२॥

काठ लाकर चिता बनाकर सजा दे। हे माता !
र उसमें आग लगा दे। हे सयानी ! तू मेरी प्रीति
सत्य कर दे। रावण की शूल के समान दुःख देने
ी वाणी कानों से कौन सुने ? ॥२॥

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि।
प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी।
अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥३॥

सीता जी के वचन सुनकर त्रिजटा ने चरण पकड़

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर उन्हें समझाया और प्रभु का प्रताप, बल अ
सुयश सुनाया। (उसने कहा—) हे सुकुमारी
सुनो, रात्रि के समय आग नहीं मिलेगी। ऐसा
कर वह अपने घर चली गयी ॥३॥

कह सीता बिधि भा प्रतिकूला।
मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा।
अवनि न आवत एकउ तारा॥४

सीता जी (मन-ही-मन) कहने लगीं—(
करूँ) विधाता ही विपरीत हो गया। न आग मिले
न पीड़ा मिटेगी। आकाश में अंगारे प्रकट दिखा
रहे हैं, पर पृथ्वी पर एक भी तारा नहीं आता॥

पावक मय ससि स्रवत न आगी।
मानहुं मोहि जानि हतभागी॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका।
सत्य नाम करु हरु मम सोका॥५

चन्द्रमा अग्निमय है, किन्तु वह भी मानो
हतभागिनी जानकर आग नहीं बरसाता। हे अ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्ष ! मेरी विनती सुन ! मेरा शोक हर ले और
पना (अशोक) नाम सत्य कर ॥५॥

नूतन किसलय अनल समाना ।
देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता ।
सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥६॥

तेरे नये-नये कोमल पत्ते अग्नि के समान हैं।
ग्नि दे, विरह-रोग का अन्त मत कर (अर्थात विरह-
ग को बढ़ाकर सीमा तक न पहुंचा)। सीता जी
विरह से परम व्याकुल देखकर वह क्षण हनुमान
को कल्प के समान बीता ॥६॥

ो०–कपि करि हृदयँ बिचार,
दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
नु असोक अंगार,
दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥१२॥

तब हनुमान जी ने हृदय में विचार कर (सीता
के समाने) अंगूठी डाल दी, मानो अशोक ने
ारा दे दिया। (यह समझकर) सीता जी ने हर्षित
कर उठकर उसे हाथ में लिया ॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०-तब देखी मुद्रिका मनोहर।
राम नाम अंकित अति सुन्दर॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी।
हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥१

तब उन्होंने राम-नाम से अंकित अत्यन्त सु एवं मनोहर अंगूठी देखी। अंगूठी को पहचान सीता जी आश्चर्य चकित होकर उसे देखने लगीं हर्ष तथा विषाद से हृदय में अकुला उठीं ॥१॥

जीति को सकइ अजय रघुराई।
माया तें असि रचि नहिं जाई॥
सीता मन बिचार कर नाना।
मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥२

(वे सोचने लगीं—) श्री रघुनाथ जी तो स अजेय हैं, उन्हें कौन जीत सकता है ? और मा ऐसी (माया के उपादान से सर्वथा रहित चिन्मय) अंगूठी बनायी नहीं जा सकती। सीत मन में अनेक प्रकार के विचार कर रही थीं। समय हनुमान जी मधुर वचन बोले—॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामचंद्र गुन बरनैं लागा।
सुनतहिं सीता कर दुख भागा॥
लागी सुनैं श्रवन मन लाई।
आदिहु तें सब कथा सुनाई॥३॥

वे श्री रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन करने लगे, (जिनके) सुनते ही सीता जी का दुःख भाग गया। वे कान और मन लगाकर उन्हें सुनने लगीं। हनुमान जी ने आदि से लेकर सारी कथा कह सुनायी ॥३॥

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई।
कही सो प्रकट होति किन भाई॥
तब हनुमंत निकट चलि गयउ।
फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ॥४॥

(सीता जी बोलीं—) जिसने कानों के लिये अमृत रूप यह सुन्दर कथा कही, वह हे भाई ! प्रकट क्यों नहीं होता ? तब हनुमान जी पास चले गये। उन्हें देखकर सीता जी फिर कर (मुख फेर कर) बैठ गयीं; उनके मन में आश्चर्य हुआ ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम दूत मैं मातु जानकी।
सत्य सपथ करुनानिधान की॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी।
दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥५॥

(हनुमान जी ने कहा—) हे माता जानकी! मैं श्री रामजी का दूत हूं। करुणानिधान की सच्ची शपथ करता हूं। हे माता! यह अंगूठी मैं ही लाया हूं। श्री रामजी ने मुझे आपके लिए यह सहिदानी (निशानी या पहिचान) दी है॥५॥

नर बानरहि संग कहु कैसें।
कही कथा भइ संगति जैसें॥

(सीता जी ने पूछा—) नर और वानर का सङ्ग कहो कैसे हुआ? तब हनुमान जी ने जैसे सङ्ग हुआ था, वह सब कथा कही॥६॥

दो०—कपि के बचन सप्रेम सुनि,
उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन,
यह कृपासिंधु कर दास॥१३॥

हनुमान जी के प्रेम युक्त वचन सुनकर सीता जी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के मन में विश्वास उत्पन्न हो गया। उन्होंने जान लिया कि यह मन, वचन और कर्म से कृपासागर श्री रघुनाथ जी का दास है ॥१३॥

चौ०-हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना।
भयहु तात मो कहुं जलजाना ॥

भगवान का जन (सेवक) जानकर अत्यन्त गाढ़ी प्रीति हो गयी। नेत्रों में 'प्रेमाश्रुओं का' जल भर आया और शरीर अत्यन्त पुलकित हो गया। 'सीता जी ने कहा—' हे तात हनुमान ! विरह सागर में डूबती हुई मुझको तुम जहाज हुए ॥१॥

अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी।
अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥२॥

मैं बलिहारी जाती हूं, अब छोटे भाई लक्ष्मण जी सहित खर के शत्रु सुख धाम प्रभु का कुशल-मङ्गल कहो। श्री रघुनाथ जी तो कोमल हृदय और कृपालु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं। फिर हे हनुमान ! उन्होंने किस कारण यह निष्ठुरता धारण कर ली है ? ।।२।।

सहज बानि सेवक सुखदायक।
कबहुंक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुं नयन मम सीतल ताता।
होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥३॥

सेवक को सुख देना उनकी स्वाभाविक बान है। वे श्रीरघुनाथ जी क्या कभी मेरी भी याद करते हैं ? हे तात ! क्या कभी उनके कोमल साँवले अङ्गों को देखकर मेरे नेत्र शीतल होंगे ? ।।३।।

बचनु न आव नयन भरे बारी।
अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता।
बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥४॥

'मुंह से' वचन नहीं निकलता, नेत्रों में 'विरह के आंसुओं का' जल भर आया। 'बड़े दुःख से वे बोलीं—' हा नाथ ! आपने मुझे बिलकुल ही भुला दिया ! सीता जी को विरह से व्याकुल देखकर हनुमान जी कोमल और विनीत वचन बोले—।।४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातु कुशल प्रभु अनुज समेता।
तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥
जनि जननी मानहु जियँ ऊना।
तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना॥५॥

हे माता! सुन्दर कृपा के धाम प्रभु भाई लक्ष्मण जी के सहित 'शरीर से' कुशल हैं, परन्तु आपके दुःख से दुखी हैं। हे माता! मन में ग्लानि न मानिये 'मन छोटा करके दुःख न कीजिये'। श्री रामचन्द्र जी के हृदय में आपसे दूना प्रेम है।

दो०–रघुपति कर संदेसु अब,
सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ,
भरे बिलोचन नीर॥१४॥

हे माता! अब धीरज धरकर श्री रघुनाथ जी का संदेश सुनिये। ऐसा कहकर हनुमान जी प्रेम से गद्गद हो गये। उनके नेत्रों में 'प्रेमाश्रुओं का' जल भर आया।

चौ०–कहेउ राम बियोग तव सीता।
मो कहुं सकल भए बिपरीता॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नव तरु किसलय मनहुं कृसानू ।
काल निसासम निसि ससि भानू ॥१॥

'हनुमान जी बोले—' श्री रामचन्द्रजी ने कहा है कि हे सीते ! तुम्हारे वियोग में मेरे लिये सभी पदार्थ प्रतिकूल हो गये हैं। वृक्षों के नये-नये कोमल पत्ते मानो अग्नि के समान, रात्रि काल रात्रि के समान, चन्द्रमा सूर्य के समान ॥१॥

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा ।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ॥२॥

और कमलों के वन भालों के समान हो गये हैं। मेघ मानो खौलता हुआ तेल बरसाते हैं। जो हित करने वाले थे, वे ही अब पीड़ा देने लगे हैं। त्रिविध 'शीतल, मन्द, सुगन्ध' वायु सांप के श्वांस के समान 'जहरीली और गरम' हो गयी है ॥२॥

कहेहु तें कछु दुख घटि होई ।
काहि कहौं यह जान न कोई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥३॥

मन का दुःख कह डालने से भी कुछ घट जाता है। पर कहूं किससे ? यह दुःख कोई जानता नहीं। हे प्रिये ! मेरे और तेरे प्रेम का तत्त्व 'रहस्य' एक मेरा मन ही जानता है ॥३॥

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं।
जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही।
मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥४॥

और वह मन सदा तेरे ही पास रहता है। बस, मेरे प्रेम का सार इतने में ही समझ ले। प्रभु का संदेश सुनते ही जानकी जी प्रेम में मग्न हो गयीं। उन्हें शरीर की सुध न रही ॥४॥

कह कपि हृदयं धीर धरु माता।
सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई।
सुनि मम वचन तजहु कदराई ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान जी ने कहा—हे माता ! हृदय में धैर्य धारण करो और सेवकों को सुख देने वाले श्री रामजी का स्मरण करो। श्री रघुनाथ जी की प्रभुता को हृदय में लाओ और मेरे वचन सुनकर कायरता छोड़ दो ॥५॥

दो०—निसिचर निकर पतंग सम,
रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयं धीर धरु,
जरे निसाचर जानु ॥१५॥

राक्षसों के समूह पतंगों के समान और श्री रघुनाथ जी के बाण अग्नि के समान हैं। हे माता ! हृदय में धैर्य धारण करो और राक्षसों को जला ही समझो ॥१५॥

चौ०—जौं रघुबीर होति सुधि पाई।
करते नहिं बिलंबु रघुराई॥
राम बान रवि उएँ जानकी।
तम बरूथ कहं जातुधान की ॥१॥

श्री रामचन्द्र जी ने यदि खबर पायी होती तो वे विलम्ब न करते। हे जानकीजी! राम बाण रूपी सूर्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के उदय होने पर राक्षसों की सेना रूपी अन्धकार कहाँ रह सकता है ? ॥१॥

अबहिं मातु मैं जाउं लवाई।
प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा।
कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥२॥

हे माता ! मैं आपको अभी यहाँ से लिवा जाऊँ। पर श्री रामचन्द्र जी की शपथ है, मुझे प्रभु 'उन' की आज्ञा नहीं है। 'अतः' हे माता ! कुछ दिन और धीरज धरो। श्री रामचन्द्रजी वानरों सहित यहाँ आवेंगे।२।

निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं।
तिहुं पुर नारदादि जसु गैहहिं॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना।
जातुधान अति भट बलवाना॥३॥

और राक्षसों को मारकर आपको ले जायेंगे। नारद आदि 'ऋषि-मुनि' तीनों लोकों में उनका यश गावेंगे। 'सीता जी ने कहा—' हे पुत्र ! सब वानर तुम्हारे ही समान 'नन्हें-नन्हें से' होंगे, राक्षस तो बड़े बलवान योद्धा हैं॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोरें हृदय परम संदेहा।
सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा॥
कनक भूधरा कार सरीरा।
समर भयंकर अतिबल बीरा॥४॥

अतः मेरे हृदय में बड़ा भारी संदेह होता है 'कि तुम जैसे बंदर राक्षसों को कैसे जीतेंगे ?' यह सुनकर हनुमान जी ने अपना शरीर प्रकट किया। सोने के पर्वत 'सुमेरु' के आकार का 'अत्यन्त विशाल' शरीर था, जो युद्ध में शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न करने वाला, अत्यन्त बलवान और वीर था॥४॥

सीता मन भरोस तब भयऊ।
पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ॥५॥

तब 'उसे देखकर' सीता जी के मन में विश्वास हुआ। हनुमान जी ने फिर छोटा रूप धारण कर लिया॥५॥

दो०—सुनु माता साखामृग,
नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हिं खाइ,
परम लघु ब्याल॥१६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे माता ! सुनो, वानरों में बहुत बल-बुद्धि नहीं होती। परन्तु प्रभु के प्रताप से बहुत छोटा सर्प भी गरुड़ को खा सकता है 'अत्यन्त निर्बल भी महान बलवान को मार सकता है' ॥१६॥

चौ०—मन संतोष सुनत कपि बानी।
भगति प्रताप तेज बल सानी॥
आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना।
होहु तात बल सील निधाना॥१॥

भक्ति, प्रताप, तेज और बल से सनी हुई हनुमान जी की वाणी सुनकर सीताजी के मन में संतोष हुआ। उन्होंने श्री रामजी के प्रिय जानकर हनुमान जी को आशीर्वाद दिया कि हे तात ! तुम बल और शील के निधान होओ ॥१॥

अजर अमर गुननिधि सुत होहू।
करहुं बहुत रघुनायक छोहू॥
करहुं कृपा प्रभु अस सुनि काना।
निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥२॥

हे पुत्र ! तुम अजर 'बुढ़ापे से रहित' अमर और गुणों के खजाने होओ। श्री रघुनाथ जी तुम पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत कृपा करें। 'प्रभु कृपा करें' ऐसा कानों से सुनते ही हनुमान जी पूर्ण प्रेम में मग्न हो गये ॥२॥

बार बार नाएसि पद सीसा।
बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता।
आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥३॥

हनुमान जी ने बार-बार सीता जी के चरणों में सिर नवाया और फिर हाथ जोड़कर कहा—'हे माता! अब मैं कृतार्थ हो गया। आपका आशीर्वाद अमोघ 'अचूक' है, यह बात प्रसिद्ध है ॥३॥

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा।
लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी।
परम सुभट रजनीचर भारी ॥४॥

हे माता! सुनो, सुन्दर फल वाले वृक्षों को देख कर मुझे बड़ी भूख लग आयी है। 'सीताजी ने कहा—' हे बेटा! सुनो, बड़े भारी योद्धा राक्षस इस वन की रखवाली करते हैं ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं ।
जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥५॥

'हनुमान जी ने कहा—' हे माता ! यदि आप मन में सुख मानें 'प्रसन्न होकर आज्ञा दें' तो मुझे उनका भय तो बिल्कुल नहीं है ॥५॥

दो०—देखि बुद्धि बल निपुन,
कपि कहेउ जानकीं जाहु ।
रघुपति चरन हृदयँ धरि,
तात मधुर फल खाहु ॥१७॥

हनुमान जी को बुद्धि और बल में निपुण देखकर जानकी जी ने कहा—जाओ । हे तात ! श्री रघुनाथ जी के चरणों को हृदय में धारण करके मीठे फल खाओ ॥१७॥

चौ०—चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥१॥

वे सीता जी को सिर नवाकर चले और बाग में घुस गये । फल खाये और वृक्षों को तोड़ने लगे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वहां बहुत-से योद्धा रखवाले थे। उनमें से कुछ को मार डाला और कुछ ने जाकर रावण से पुकार की—॥१॥

नाथ एक आवा कपि भारी।
तेहिं असोक बाटिका उजारी॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे।
रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे॥२॥

'और कहा—' हे नाथ! एक बड़ा भारी बन्दर आया है। उसने अशोक वाटिका उजाड़ डाली। फल खाये, वृक्षों को उजाड़ डाला और रखवालों को मसल-मसलकर जमीन पर डाल दिया॥२॥

सुनि रावन पठए भट नाना।
तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना॥
सब रजनीचर कपि संघारे।
गए पुकारत कछु अधमारे॥३॥

यह सुनकर रावण ने बहुत-से योद्धा भेजे। उन्हें देखकर हनुमान जी ने गर्जना की। हनुमान जी ने सब राक्षसों को मार डाला, कुछ जो अधमरे थे चिल्लाते हुए गये॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा।
चला संग लै सुभट अपारा॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा।
ताहि निपाति महाधुनि गर्जा॥४॥

फिर रावण ने अक्षयकुमार को भेजा। वह असंख्य श्रेष्ठ योद्धाओं को साथ लेकर चला। उसे आते देखकर हनुमान जी ने एक वृक्ष 'हाथ में' लेकर ललकारा और उसे मारकर महाध्वनि 'बड़े जोर' से गर्जना की ॥४॥

दो०—कछु मारेसि कछु मर्देसि,
कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे,
प्रभु मर्कट बल भूरि॥१८॥

उन्होंने सेना में कुछ को मार डाला और कुछ को मसल डाला और कुछ को पकड़-पकड़कर धूल में मिला दिया। कुछ ने फिर जाकर पुकार की कि हे प्रभु! बन्दर बहुत बलवान है ॥१८॥

चौ०—सुनि सुत बध लंकेस रिसाना।
पठएसि मेघनाद बलवाना॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही ।
देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥१॥

पुत्र का वध सुनकर रावण क्रोधित हो उठा और उसने 'अपने जेठे पुत्र' बलवान मेघनाद को भेजा। 'उसने कहा—' हे पुत्र ! मारना नहीं; उसे बाँध लाना। उस बंदर को देखा जाय कि कहाँ का है ।१।

चला इन्द्रजित अतुलित जोधा ।
बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा ।
कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥२॥

इन्द्र को जीतने वाला अतुलनीय योद्धा मेघनाद चला। भाई का मारा जाना सुन उसे क्रोध हो आया। हनुमान जी ने देखा कि अबकी भयानक योद्धा आया है। तब वे कटकटाकर गर्जे और दौड़े ॥२

अति बिसाल तरु एक उपारा ।
बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा ।
गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥३॥

उन्होंने एक बहुत बड़ा वृक्ष उखाड़ लिया अ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'उसके प्रहार से' लंकेश्वर रावण के पुत्र मेघनाद को बिना रथ के कर दिया 'रथ को तोड़कर उसे नीचे पटक दिया'। उसके साथ जो बड़े-बड़े योद्धा थे, उनको पकड़-पकड़कर हनुमान जी अपने शरीर से मसलने लगे ॥३॥

तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा।
भिरे जुगल मानहुं गजराजा ॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई।
ताहि एक छन मुरुछा आई ॥४॥

उन सबको मारकर फिर मेघनाद से लड़ने लगे। 'लड़ते हुए वे ऐसे मालूम होते थे' मानो दो गजराज 'श्रेष्ठ हाथी' भिड़ गये हों। हनुमान जी उसे एक घूंसा मारकर वृक्ष पर जा चढ़े। उसको क्षण भर के लिये मूर्च्छा आ गयी ॥४॥

उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया।
जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥५॥

फिर उठकर उसने बहुत माया रची; परन्तु [पव]न के पुत्र उससे जीते नहीं जाते ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०-ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा,
कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ,
महिमा मिटइ अपार ॥१६॥

अन्त में उसने ब्रह्मास्त्र संधान 'प्रयोग' किया, तब हनुमान जी ने मन में विचार किया कि यदि ब्रह्मास्त्र को नहीं मानता हूं तो उसकी अपार महिमा मिट जाएगी ॥१६॥

चौ०-ब्रह्मबान कपि कहुं तेहिं मारा।
परतिहुँ बार कटकु संघारा॥
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ।
नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥१॥

उसने हनुमान जी को ब्रह्म बाण मारा, 'जिसके लगते ही वे वृक्ष के नीचे गिर पड़े' परन्तु गिरते समय भी उन्होंने बहुत-सी सेना मार डाली। जब उसने देखा कि हनुमान जी मूर्च्छित हो गये हैं, तब वह उन्हें नागपाश से बाँधकर ले गया ॥१॥

जासु नाम जपि सुनहु भवानी।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तासु दूत कि बंध तरु आवा ।
प्रभु कारज लगि कपिहिं बंधावा ॥२॥

'शिवजी कहते हैं—' हे भवानी ! सुनो, जिनका नाम जप कर ज्ञानी 'विवेकी' मनुष्य संसार 'जन्म-मरण' के बन्धन को काट डालते हैं, उनका दूत कहीं बन्धन में आ सकता है ? किन्तु प्रभु के कार्य के लिये हनुमान जी ने स्वयं अपने को बंधा लिया ॥२॥

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए ।
कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई ।
कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥३॥

बंदर का बाँधा जाना सुनकर राक्षस दौड़े और कौतुक के लिये 'तमाशा देखने के लिए' सब सभा में आये । हनुमान जी ने जाकर रावण की सभा देखी, उसकी अत्यन्त प्रभुता 'ऐश्वर्य' कुछ कही नहीं जाती ॥३॥

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता ।
भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखि प्रताप न कपि मन संका ।
जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥४॥

देवता और दिक्पाल हाथ जोड़े बड़ी नम्रता के साथ भयभीत हुए सब रावण की भौं ताक रहे हैं 'उसका रुख देख रहे हैं' । उसका ऐसा प्रताप देखकर भी हनुमान जी के मन में जरा भी डर नहीं हुआ । वे ऐसे निःशंक खड़े रहे, जैसे सर्पों के समूह में गरुड़ निःशंक 'निर्भय' रहते हैं ॥४॥

दो०–कपिहि बिलोकि दसानन,
बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्हि,
पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥२०॥

हनुमान जी को देखकर रावण दुर्वचन कहता हुआ खूब हंसा । फिर पुत्र वध का स्मरण किया तो उसके हृदय में विषाद उत्पन्न हो गया ॥२०॥

चौ०–कह लंकेस कवन तैं कीसा ।
केहि कें बल घालेसि बन खीसा ॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही ।
देखउँ अति असंक सठ तोही ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लंकापति रावण ने कहा—रे वानर ! तू कौन है ? किसके बल पर तूने वन को उजाड़ कर नष्ट कर डाला ? क्या तूने कभी मुझे 'मेरा नाम और यश' कानों से नहीं सुना ? रे शठ ! मैं तुझे अत्यन्त निःशंक देख रहा हूं ॥१॥

मारे निसिचर केहिं अपराधा।
कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा॥
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया।
पाइ जासु बल बिरचति माया ॥२॥

तूने किस अपराध से राक्षसों को मारा ? रे मूर्ख ! बता, क्या तुझे प्राण जाने का भय नहीं है ? 'हनुमान जी ने कहा—' हे रावण ! सुन; जिनका बल पाकर माया सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के समूहों की रचना करती हैं; ॥२॥

जाकें बल बिरंचि हरि ईसा।
पालत सृजत हरत दससीसा॥
जा बल सीस धरत सहसानन।
अंडकोस समेत गिरि कानन ॥३॥

जिनके बल से हे दशशीश ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्रमशः' सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करते हैं; जिनके बल से सहस्र मुख 'फणों' वाले शेषजी पर्वत और वन सहित समस्त ब्रह्माण्ड को सिर पर धारण करते हैं; ॥३॥

धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता।
तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता॥
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा।
तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥४॥

जो देवताओं की रक्षा के लिए नाना प्रकार की देह धारण करते हैं और जो तुम्हारे जैसे मूर्खों को शिक्षा देने वाले हैं; जिन्होंने शिवजी के कठोर धनुष को तोड़ डाला और उसी के साथ राजाओं के समूह का गर्व चूर्ण कर दिया ॥४॥

खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली।
बधे सकल अतुलित बलसाली ॥५॥

जिन्होंने खर, दूषण, त्रिशिरा और बालि को मार डाला, जो सब-के-सब अतुलनीय बलवान् थे; ।५।

दो०–जाके बल लवलेस तें,
जितेहु चराचर झारि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तासु दूत मैं जा करि,
हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥

जिनके लेश मात्र बल से तुमने समस्त चराचर जगत को जीत लिया और जिनकी प्रिय पत्नी को तुम 'चोरी से' हर लाये हो, मैं उन्हीं का दूत हूं ।२१।

चौ०—जानेउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई ।
सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जसु पावा ।
सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥१॥

मैं तुम्हारी प्रभुता को खूब जानता हूं, सहस्रबाहु से तुम्हारी लड़ाई हुई थी और बालि से युद्ध करके तुमने यश प्राप्त किया था। हनुमान जी के 'मार्मिक' वचन सुनकर रावण ने हंसकर बात टाल दी ॥१॥

खायउँ फल प्रभु लागी भूंखा ।
कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
सब कें देह परम प्रिय स्वामी ।
मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥२॥

हे 'राक्षसों के' स्वामी ! मुझे भूख लगी थी, 'इसलिए' मैंने फल खाये और वानर-स्वभाव के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारण वृक्ष तोड़े। हे 'निशाचरों के' मालिक! देह सबको परम प्रिय है। कुमार्ग पर चलने वाले 'दुष्ट' राक्षस जब मुझे मारने लगे ॥२॥

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे।
तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा।
कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥३॥

तब जिन्होंने मुझे मारा, उनको मैंने भी मारा। उस पर तुम्हारे पुत्र ने मुझको बाँध लिया। 'किन्तु' मुझे अपने बाँधे जाने की कुछ भी लज्जा नहीं है। मैं तो अपने प्रभु का कार्य किया चाहता हूँ ॥३॥

बिनती करउँ जोरि कर रावन।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी।
भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥४॥

हे रावण! मैं हाथ जोड़कर तुमसे विनती करता हूँ, तुम अभिमान छोड़कर मेरी सीख सुनो, तुम अपने पवित्र कुल का विचार करके देखो और भ्रम को छोड़कर भक्त भयहारी भगवान् को भजो ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाकें डर अति काल डेराई।
जो सुर असुर चराचर खाई॥
तासों बयरु कबहुं नहिं कीजै।
मोरे कहें जानकी दीजै॥५॥

जो देवता, राक्षस और समस्त चराचर को खा जाता है, वह काल भी जिनके डर से अत्यन्त डरता है, उनसे कदापि वैर न करो और मेरे कहने से जानकी जी को दे दो॥५॥

दो०-प्रनतपाल रघुनायक,
करुना सिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं,
तव अपराध बिसारि॥२२॥

खर के शत्रु श्रीरघुनाथ जी शरणागतों के रक्षक और दया के समुद्र हैं। शरण में जाने पर प्रभु तुम्हारा अपराध भुलाकर तुम्हें अपनी शरण में रख लेंगे॥२३॥

चौ०-राम चरन पंकज उर धरहू।
लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका ।
तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥१॥

तुम श्री राम जी के चरण कमलों को हृदय में धारण करो और लंका का अचल राज्य करो । ऋषि पुलस्त्य जी का यश निर्मल चन्द्रमा के समान है । उस चन्द्रमा में तुम कलंक न बनो ॥१॥

राम नाम बिनु गिरा न सोहा ।
देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी ।
सब भूषन भूषित बर नारी ॥२॥

राम नाम के बिना वाणी शोभा नहीं पाती, मद-मोह को छोड़ विचार कर देखो । हे देवताओं के शत्रु सब गहनों से सजी हुई सुन्दरी स्त्री भी कपड़ों के बिना (नंगी) शोभा नहीं पाती ॥२॥

राम बिमुख संपति प्रभुताई ।
जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ।
बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ॥३॥

रामविमुख पुरुष की सम्पत्ति और प्रभुता रही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुई भी चली जाती है और उसका पाना न पाने के समान है। जिन नदियों के मूल में कोई जलस्रोत नहीं है (अर्थात् जिन्हें केवल बरसात का आसरा है) वे वर्षा बीत जाने पर फिर तुरंत ही सूख जाती हैं ॥३॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी ।
बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
संकर सहस बिष्नु अज तोही ।
सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥४॥

हे रावण ! सुनो, मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूं कि राम विमुख की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। हजारों शंकर, विष्णु और ब्रह्मा भी श्री रामजी के साथ द्रोह करने वाले तुमको नहीं बचा सकते ॥४॥

दो०–मोहमूल बहु सूल प्रद,
त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक,
कृपा सिंधु भगवान ॥२३॥

मोह ही जिसका सूल है ऐसे (अज्ञानजनित), बहुत पीड़ा देने वाले, तमरूप अभिमान का त्याग कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो और रघुकुल के स्वामी, कृपा के समुद्र भगवा
श्री रामचन्द्र जी का भजन करो ॥२३॥

चौ०–जदपि कही कपि अति हित बानी।
भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥
बोला बिहसि महा अभिमानी।
मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥१॥

यद्यपि हनुमान जी ने भक्ति, ज्ञान, वैराग्य औ नीति से सनी हुई बहुत ही हित की वाणी कही, भी वह महान अभिमानी रावण बहुत हंसकर (व्य से) बोला कि हमें यह बंदर बड़ा ज्ञानी मिला ॥१॥

मृत्यु निकट आई खल तोही।
लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना।
मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥२॥

रे दुष्ट ! तेरी मृत्यु निकट आ गयी है। अधम मुझे शिक्षा देने चला है। हनुमान जी ने कहा—इ उलटा ही होगा (अर्थात मृत्यु तेरी निकट आई मेरी नहीं)। यह तेरा मतिभ्रम (बुद्धि का फेर) मैंने प्रत्यक्ष जान लिया है ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना।
बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना॥
सुनत निसाचर मारन धाए।
सचिवन्ह सहित बिभीषन आए॥३॥

हनुमान जी के वचन सुनकर वह बहुत ही कुपित हो गया [और बोला—] अरे ! इस मूर्ख का प्राण शीघ्र ही क्यों नहीं हर लेते ? सुनते ही राक्षस उन्हें मारने दौड़े। उसी समय मन्त्रियों के साथ विभीषण जी वहाँ आ पहुँचे ॥३॥

नाइ सीस करि बिनय बहूता।
नीति बिरोध न मारिअ दूता॥
आन दंड कछु करिअ गोसाँई।
सबहीं कहा मंत्र भल भाई॥४॥

उन्होंने सिर नवाकर और बहुत विनय करके रावण से कहा कि दूत को मारना नहीं चाहिए, यह नीति के विरुद्ध है। हे गोसाईं ! कोई दूसरा दण्ड दिया जाय। सबने कहा—भाई ! यह सलाह उत्तम है ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनत बिहसि बोला दसकंधर ।
अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥५॥

यह सुनते ही रावण हंसकर बोला—अच्छा तो, बंदर को अंग-भंग करके भेज (लौटा) दिया जाय ॥५॥

दो०–कपि कें ममता पूँछ पर,
सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि,
पुनि पावक देहु लगाइ ॥२४॥

मैं सबको समझाकर कहता हूं कि बन्दर की ममता पूँछ पर होती है । अतः तेल में कपड़ा डुबोकर उसे इसकी पूंछ में बाँधकर फिर आग लगा दो ॥२४॥

चौ०–पूंछहीन बानर जहँ जाइहि ।
तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई ।
देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥१॥

जब बिना पूंछ का यह बंदर वहाँ (अपने स्वामी के पास) जाएगा, तब यह मूर्ख अपने मालिक को साथ ले आएगा । जिनकी इसने बहुत बड़ाई की है, मैं जरा उनकी प्रभुता (सामर्थ्य) तो देखूं ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वचन सुनत कपि मन मुसुकाना।
भइ सहाय सारद मैं जाना॥
जातुधान सुनि रावन बचना।
लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना॥२॥

यह वचन सुनते ही हनुमान जी मन में मुस्कराये [और मन-ही-मन बोले कि] मैं जान गया, सरस्वती जी [इसे ऐसी बुद्धि देने में] सहायक हुई हैं। रावण के वचन सुनकर मूर्ख राक्षस वही (पूँछ में आग लगाने की) तैयारी करने लगे॥२॥

रहा न नगर बसन घृत तेला।
बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी।
मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी॥३॥

[पूँछ के लपेटने में इतना कपड़ा और घी-तेल लगा कि नगर में कपड़ा, घी और तेल नहीं रह गया। हनुमान जी ने ऐसा खेल किया कि पूँछ चढ़ गई (लम्बी हो गई)। नगरवासी लोग तमाशा देखने आये। वे हनुमान जी को पैरों से ठोकर मारते हैं और उनकी बहुत हंसी करते हैं॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाजहिं ढोल देहिं सब तारी।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता।
भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥४॥

ढोल बजते हैं, सब लोग तालियाँ पीटते हैं। हनुमान जी को नगर में फिराकर, फिर पूंछ में आग लगा दी। अग्नि को जलते हुए देखकर हनुमान जी तुरंत ही बहुत छोटे रूप में हो गए ॥४॥

निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी।
भई सभीत निसाचर नारी ॥५॥

बन्धन से निकलकर वे सोने की अटारियों पर जा चढ़े। उनको देखकर राक्षसों की स्त्रियाँ भयभीत हो गयीं ॥५॥

दो०–हरि प्रेरित तेहि अवसर,
चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा,
कपि बढ़ि लाग अकास ॥२५॥

उस समय भगवान की प्रेरणा से उनचासों पवन चलने लगे। हनुमान जी अट्टहास करके गर्जे और बढ़ कर आकाश से जा लगे ॥२५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०-देह बिसाल परम हरुआई।
मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला।
झपट लपट बहु कोटि कराला॥१॥

देह बड़ी विशाल, परंतु बहुत ही हल्की (फुर्तीली) है। वे दौड़कर एक महल से दूसरे महल पर चढ़ जाते हैं। नगर जल रहा है, लोग बेहाल हो गए हैं। आग की करोड़ों भयंकर लपटें झपट रही हैं॥१॥

तात मातु हा सुनिअ पुकारा।
एहिं अवसर को हमहि उबारा॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई।
बानर रूप धरें सुर कोई॥२॥

हाय बप्पा! हाय मैया! इस अवसर पर हमें कौन बचावेगा? [चारों ओर] यही पुकार सुनाई पड़ रही है। हमने तो पहले ही कहा था कि यह वानर नहीं है, वानर का रूप धरे कोई देवता है॥२॥

साधु अवग्या कर फलु ऐसा।
जरइ नगर अनाथ कर जैसा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जारा नगरु निमिष एक माहीं।
एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥३॥

साधु के अपमान का यह फल है कि नगर अनाथ के नगर की तरह जल रहा है। हनुमान जी ने एक ही क्षण में सारा नगर जला डाला। एक विभीषण का घर नहीं जलाया ॥३॥

ताकर दूत अनल जेहिं सिरिजा।
जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी।
कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥४॥

(शिवजी कहते हैं—) हे पार्वती ! जिन्होंने अग्नि को बनाया, हनुमान जी उन्हीं के दूत हैं। इसी कारण वे अग्नि से नहीं जले। हनुमान जी ने उलट-पलटकर (एक ओर से दूसरी ओर तक) सारी लंका जला दी। फिर वे समुद्र में कूद पड़े ॥४॥

दो०—पूंछ बुझाइ खोइ श्रम,
धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें,
ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूंछ बुझाकर, थकावट दूर करके और फिर छोटा-सा रूप धारण कर हनुमान जी श्री जानकीजी के सामने हाथ जोड़कर जा खड़े हुए ॥२६॥

चौ०–मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा।
जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ।
हरष समेत पवनसुत लयऊ॥१॥

(हनुमान जी ने कहा–) हे माता ! मुझे कोई चिन्ह (पहचान) दीजिये, जैसे श्री रघुनाथ जी ने मुझे दिया था। तब सीता जी ने चूड़ामणि उतारकर दी। हनुमान जी ने उसको हर्ष पूर्वक ले लिया ॥१॥

कहेहु तात अस मोर प्रनामा।
सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥
दीन दयाल बिरदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥२॥

(जानकी जी ने कहा–) हे तात ! मेरा प्रणाम निवेदन करना और इस प्रकार कहना–हे प्रभु ! यद्यपि आप सब प्रकार से पूर्ण काम हैं (आपको किसी प्रकार की कामना नहीं है), तथापि दीनों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(दुखियों) पर दया करना आपका विरद है (और मैं दीन हूं), अतः उस विरद को याद करके, हे नाथ! मेरे भारी संकट को दूर कीजिये ॥२॥

तात सक्रसुत कथा सुनाएहु ।
बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
मास दिवस महुं नाथु न आवा ।
तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥३॥

हे तात ! इन्द्र पुत्र जयन्त की कथा (घटना) सुनाना और प्रभु को उनके बाण का प्रताप समझाना (स्मरण कराना) । यदि महीने भर में नाथ न आये तो मुझे जीती न पायेंगे ॥३॥

कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना ।
तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती ।
पुनि मो कहुं सोइ दिनु सो राती ॥४॥

हे हनुमान ! कहो, मैं किस प्रकार प्राण रक्खूँ ? हे तात ! तुम भी अब जाने को कह रहे हो । तुमको देखकर छाती ठंडी हुई थी । फिर मुझे वही दिन और वही रात ! ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—जनकसुतहि समुझाइ करि,
बहु विधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि,
गवनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥

हनुमान जी ने जानकी जी को समझाकर बहुत प्रकार से धीरज दिया और उनके चरण कमलों में सिर नवाकर श्री रामजी के पास गमन किया ॥२७॥

चौ०—चलत महाधुनि गर्जेसि भारी ।
गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा ।
सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥१॥

चलते समय उन्होंने महाध्वनि से भारी गर्जन किया, जिसे सुनकर राक्षसों की स्त्रियों के गर्भ गिरने लगे। समुद्र लाँघकर वे इस पार आये और उन्होंने वानरों को किलकिला शब्द (हर्षध्वनि) सुनाया ।१।

हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।
नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा ।
कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान जी को देखकर सब हर्षित हो गये और तब वानरों ने अपना नया जन्म समझा। हनुमान जी का मुख प्रसन्न है और शरीर में तेज विराजमान है, (जिससे उन्होंने समझ लिया कि) ये श्री रामचन्द्र जी का कार्य कर आये हैं ॥२॥

मिले सकल अति भए सुखारी।
तलफत मीन पाव जिमिवारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा।
पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥३॥

सब हनुमान जी से मिले और बहुत ही सुखी हुए, जैसे तड़पती हुई मछली को जल मिल गया हो। सब हर्षित हो नये-नये इतिहास (वृतान्त) पूछते-कहते हुए श्री रघुनाथ जी के पास चले ॥३॥

तब मधुबन भीतर सब आए।
अंगद संमत मधु फल खाए ॥
रखवारे जब बरजन लागे।
मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥४॥

तब सब लोग मधुवन के भीतर आये और अंगद की सम्मति से सबने मधुर फल (या मधु और फल)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाये। जब रखवाले बरजने लगे, तब घूंसों की मार मारते ही सब रखवाले भाग छूटे ॥४॥

दो०-जाइ पुकारे ते सब,
बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि,
करि आए प्रभु काज ॥२८॥

उन सबने जाकर पुकारा कि युवराज अंगद बन उजाड़ रहे हैं। यह सुनकर सुग्रीव हर्षित हुए कि वानर प्रभु का कार्य कर आये हैं ॥२८॥

चौ०-जौं न होति सीता सुधि पाई।
मधुबन के फल सकहिं कि खाई॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा।
आइ गए कपि सहित समाजा ॥१॥

यदि सीता जी की खबर न पाई होती तो क्या वे मधुबन के फल खा सकते थे? इस प्रकार राजा सुग्रीव मन में विचार कर ही रहे थे कि समाज-सहित वानर आ गये ॥१॥

आइ सबन्हि नावा पद सीसा।
मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूंछी कुसल कुसल पद देखी।
राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥२॥

सबने आकर सुग्रीव के चरणों में सिर नवाया। कपिराज सुग्रीव सभी से बड़े प्रेम के साथ मिले। उन्होंने कुशल पूछी, (तब वानरों ने उत्तर दिया—) आपके चरणों के दर्शन से सब कुशल है। श्री रामजी की कृपा से विशेष कार्य हुआ (कार्य में विशेष सफलता हुई है) ॥२॥

नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना।
राखे सकल कपिन्ह के प्राना॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ।
कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥३॥

हे नाथ! हनुमान ने ही सब कार्य किया और सब वानरों के प्राण बचा लिये। यह सुनकर सुग्रीव जी हनुमान जी से फिर मिले और सब वानरों समेत श्री रघुनाथ जी के पास चले ॥३॥

राम कपिन्ह जब आवत देखा।
किएँ काजु मन हरष बिसेषा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फटिक सिला बैठे द्वौ भाई।
हरे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥४॥

श्री रामजी ने जब वानरों को कार्य किये हुए आते देखा तब उनके मन में विशेष हर्ष हुआ। दोनों भाई स्फटिक शिला पर बैठे थे। सब वानर जाकर उनके चरणों पर गिर पड़े ॥४॥

दो०–प्रीति सहित सब भेंटे,
रघुपति करुना पुंज।
पूंछी कुसल नाथ अब,
कुसल देखि पद कंज ॥२९॥

दया की राशि श्री रघुनाथ जी सबसे प्रेम सहित गले लगाकर मिले और कुशल पूछी। (वानरों ने कहा—) हे नाथ! आपके चरण कमलों के दर्शन पाने से अब कुशल है ॥२९॥

चौ०–जामवंत कह सुनु रघुराया।
जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर।
सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाम्बवान ने कहा–हे रघुनाथ जी ! सुनिये । हे नाथ ! जिसपर आप दया करते हैं, उसे सदा कल्याण और निरन्तर कुशल है। देवता, मनुष्य और मुनि सभी उस पर प्रसन्न रहते हैं ॥ १ ॥

सोइ बिजई बिनई गुन सागर ।
तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू ।
जन्म हमार सुफल भा आजू ॥२॥

वही विजयी है, वही विनयी है और वही गुणों का समुद्र बन जाता है। उसी का सुन्दर यश तीनों लोकों में प्रकाशित होता है। प्रभु की कृपा से सब कार्य हुआ। आज हमारा जन्म सफल हो गया ॥२॥

नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी ।
सहसहुं मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित्र सुहाए ।
जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥३॥

हे नाथ पवनसुत हनुमान ने जो करनी की, उसका हजार मुखों से भी वर्णन नहीं किया जा सकता। तब जाम्बवान ने हनुमान जी के सुन्दर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चरित्र (कार्य) श्री रघुनाथ जी को सुनाये ॥३॥

सुनत कृपानिधि मन अति भाए ।
पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी ।
रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥४॥

(वे चरित्र) सुनने पर कृपा निधि श्री रामचन्द्र जी के मन को बहुत ही अच्छे लगे । उन्होंने हर्षित होकर हनुमान जी को फिर हृदय से लगा लिया और कहा—हे तात ! कहो, सीता किस प्रकार रहती है और अपने प्राणों की रक्षा करती है ? ॥४॥

दो०—नाम पाहरू दिवस निसि,
ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित,
जाहिं प्रान केहिं बाट ॥३०॥

(हनुमान जी ने कहा—) आपका नाम रात-दिन पहरा देने वाला है, आपका ध्यान ही किवाड़ है । नेत्रों को अपने चरणों में लगाये रहती हैं, यही ताला लगा है; फिर प्राण जायँ तो किस मार्ग से ? ॥३०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०–चलत मोहि चूड़ामणि दीन्ही।
रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी।
बचन कहे कछु जनककुमारी॥१॥

चलते समय उन्होंने मुझे चूड़ामणि (उतारकर) दी। श्री रघुनाथ जी ने उसे लेकर हृदय से लगा लिया। (हनुमान जी ने फिर कहा—) हे नाथ! दोनों नेत्रों में जल भर कर जानकी जी ने मुझसे कुछ वचन कहे—॥१॥

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना।
दीन बंधु प्रनतारति हरना॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी।
केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी॥२॥

छोटे भाई समेत प्रभु के चरण पकड़ना और कहना कि आप दीन बन्धु हैं, शरणागत के दुःखों को हरने वाले हैं और मैं मन, वचन और कर्म से आपके चरणों की अनुरागिणी हूं। फिर स्वामी (आप) ने मुझे किस अपराध से त्याग दिया? ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवगुन एक मोर मैं माना।
बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा।
निसरत प्रान करहिं हठि बाधा॥३॥

(हाँ) एक दोष मैं अपना (अवश्य) मानती हूं कि आपका वियोग होते ही मेरे प्राण नहीं चले गये। किन्तु हे नाथ ! यह तो नेत्रों का अपराध है जो प्राणों के निकलने में हठ पूर्वक बाधा देते हैं ॥३॥

बिरह अगिनि तनु तूल समीरा।
स्वास जरइ छन माहिं सरीरा॥
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी।
जरैं न पाव देह बिरहागी॥४॥

विरह अग्नि है, शरीर रुई है और श्वांस पवन है; इस प्रकार (अग्नि और पवन का संयोग होने से) यह शरीर क्षण मात्र में जल सकता है। परन्तु नेत्र अपने हित के लिए (प्रभु का स्वरूप देखकर सुखी होने के लिए) जल (आँसू) बरसाते हैं, जिससे विरह की आग से भी देह जलने नहीं पाती ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता कै अति बिपति बिसाला।
बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥५॥

सीता जी की विपत्ति बहुत बड़ी है। हे दीन दयालु ! वह बिना कही ही अच्छी है (कहने से आपको बड़ा क्लेश होगा) ॥५॥

दो०–निमिष निमिष करुनानिधि,
जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ,
भुज बल खल दल जीति ॥३१॥

हे करुणानिधान ! उनका एक-एक पल कल्प के समान बीतता है। अतः हे प्रभु ! तुरन्त चलिये और अपनी भुजाओं के बल से दुष्टों के दल को जीत कर सीता जी को ले आइये ॥३१॥

चौ०–सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना।
भरि आए जल राजिव नयना ॥
बचन कायँ मन मम गति जाही।
सपनेहुं बूझिअ बिपति कि ताही ॥१॥

सीता जी का दुःख सुनकर सुख के धाम प्रभु के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमल नेत्रों में जल भर आया [और वे बोले—] मन, वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति (मेरा ही आश्रय) है, उसे क्या स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है ? ॥१॥

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई।
जब तव सुमिरन भजन न होई॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की।
रिपुहि जीति आनिबी जानकी॥२॥

हनुमान जी ने कहा—हे प्रभु ! विपत्ति तो वही (तभी) है जब आपका भजन-स्मरण न हो। हे प्रभो! राक्षसों की बात ही कितनी है ? आप शत्रु को जीत कर जानकी जी को ले आवेंगे ॥२॥

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥३॥

[भगवान कहने लगे—] हे हनुमान् ! सुन; तेरे समान मेरा उपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि कोई भी शरीर धारी नहीं है। मैं तेरा प्रत्युपकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(बदले में उपकार) तो क्या करूँ, मेरा मन भी तेरे सामने नहीं हो सकता ॥३॥

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।
देखेउँ करि बिचार मन माहीं॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता।
लोचन नीर पुलक अति गाता॥४॥

हे पुत्र ! सुन; मैंने मन में [खूब] विचार करके देख लिया कि मैं तुझसे उऋण नहीं हो सकता। देवताओं के रक्षक प्रभु बार-बार हनुमान जी को देख रहे हैं। नेत्रों में प्रेमाश्रुओं का जल भरा है और शरीर अत्यन्त पुलकित है ॥४॥

दो०—सुनि प्रभु बचन बिलोकि,
मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल,
त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

प्रभु के वचन सुनकर और उनके [प्रसन्न] मुख तथा [पुलकित] अङ्गों को देखकर हनुमानजी हर्षित हो गये और प्रेम में विकल होकर 'हे भगवान ! मेरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्षा करो, रक्षा करो, कहते हुए श्री रामजी के चरणों में गिर पड़े ॥३२॥

चौ०–बार बार प्रभु चहइ उठावा ।
प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा ।
सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥१॥

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परन्तु प्रेम में डूबे हुए हनुमान जी को चरणों से उठना सुहाता नहीं । प्रभु का कर-कमल हनुमानजी के सिर पर है । उस स्थिति का स्मरण करके शिवजी प्रेम मग्न हो गये ॥१॥

सावधान मन करि पुनि संकर ।
लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा ।
कर गहि परम निकट बैठावा ॥२॥

फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यन्त सुन्दर कथा कहने लगे—हनुमान जी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यन्त निकट बैठा लिया ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहु कपि रावन पालित लंका।
केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना।
बोला बचन बिगत अभिमाना॥३॥

हे हनुमान ! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बाँके किले को तुमने किस तरह जलाया ? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमान रहित वचन बोले—॥३॥

साखामृग कै बड़ि मनुसाई।
साखा तें साखा पर जाई॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा।
निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥४॥

बन्दर का बस,यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है ! मैंने जो समुद्र लाँघकर सोने का नगर जलाया और राक्षस गण को मार कर अशोक वन को उजाड़ डाला ॥४॥

सो सब तव प्रताप रघुराई।
नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह सब तो हे श्री रघुनाथ जी ! आप ही का प्रताप है। हे नाथ ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है ।।५।।

दो०—ता कहुं प्रभु कछु अगम नहिं,
जा पर तुम्ह अनुकूल ॥
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि,
सकइ खलु तूल ॥३३॥

हे प्रभु ! जिस पर आप प्रसन्न हो, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रुई [जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है] बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असम्भव भी सम्भव हो सकता है) ।।३३।।

चौ०—नाथ भगति अति सुखदायनी ।
देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी ।
एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥१॥

हे नाथ ! मुझे अत्यन्त सुख देने वाली अपनी निश्चल भक्ति कृपा करके दीजिये। हनुमान जी की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अत्यन्त सरल वाणी सुनकर हे भवानी ! तब प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहा ।१।

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना ।
ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
यह संबाद जासु उर आवा ।
रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥२॥

हे उमा ! जिसने श्री रामजी का स्वभाव जान लिया, उसे भजन छोड़ कर दूसरी बात ही नहीं सुहाती । यह स्वामी-सेवक का संवाद जिसके हृदय में आ गया, वही श्री रघुनाथ जी के चरणों की भक्ति पा गया ॥२॥

मुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा ।
जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा ।
कहा चलैं कर करहु बनावा ॥३॥

प्रभु के वचन सुनकर वानर गण कहने लगे-- कृपालु आनन्द कन्द श्री रामजी की जय हो, जय हो, जय हो ! तब श्री रघुनाथजी ने कपिराज सुग्रीव को बुलाया और कहा—चलने की तैयारी करो ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब बिलंबु केहि कारन कीजे ।
तुरत कपिन्ह कहुं आयसु दीजे ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी ।
नत तें भवन चले सुर हरषी ॥४॥

अब विलम्ब किस कारण किया जाय ! वानरों को तुरन्त आज्ञा दो। (भगवान की) यह लीला (रावण वध की तैयारी) देखकर, बहुत-से फूल बरसाकर और हर्षित होकर देवता आकाश से अपने-अपने लोक को चले ॥४॥

दो०–कपिपति बेगि बोलाए,
आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल,
बानर भालु बरूथ ॥३४॥

वानर राज सुग्रीव ने शीघ्र ही वानरों को बुलाया, सेनापतियों के समूह आ गये। वानर-भालुओं के झुण्ड अनेक रंगों के हैं और उनमें अतुलनीय बल है ॥३४॥

चौ०–प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा ।
गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखी राम सकल कपि सेना।
चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥१॥

वे प्रभु के चरण कमलों में सिर नवाते हैं। महान बलवान् रीछ और वानर गरज रहे हैं। श्री रामजी ने वानरों की सारी सेना देखी। तब कमल नेत्रों से कृपा पूर्वक उनकी ओर दृष्टि डाली ॥१॥

राम कृपा बल पाइ कपिंदा।
भए पच्छजुत मनहुं गिरिंदा॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना।
सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥२॥

राम कृपा का बल पाकर श्रेष्ठ वानर मानो पंख वाले बड़े पर्वत हो गये। तब श्री रामजी ने हर्षित होकर प्रस्थान (कूच) किया। अनेक सुन्दर और शुभ शकुन हुए ॥२॥

जासु सकल मंगलमय कीती।
तासु पयान सगुन यह नीती॥
प्रभु पयान जाना बैदेहीं।
फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिनकी कीर्ति सब मंगलों से पूर्ण है उनके प्रस्थान के समय शकुन होना, यह नीति है (लीला की मर्यादा है)। प्रभु का प्रस्थान जानकी जी ने भी जान लिया। उनके बायें अङ्ग फड़क-फड़ककर मानो कहे देते थे (श्री रामजी आ रहे हैं) ॥३॥

जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई।
असगुन भयउ रावनहि सोई॥
चला कटकु को बरनैं पारा।
गर्जहिं बानर भालु अपारा॥४॥

जानकी जी को जो-जो शकुन होते थे, वही-वही रावण के लिए अपशकुन हुए। सेना चली, उसका वर्णन कौन कर सकता है? असंख्य वानर और भालू गर्जना कर रहे हैं ॥४॥

नख आयुध गिरि पादपधारी।
चले गगन महि इच्छाचारी॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं।
डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं॥५॥

नख ही जिनके शस्त्र हैं, वे इच्छानुसार (सर्वत्र बेरोक-टोक) चलने वाले रीछ-वानर पर्वतों और वृक्षों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को धारण किये कोई आकाश मार्ग से और कोई पृथ्वी पर चले जा रहे थे। वे सिंह के समान गर्जना कर रहे हैं। (उनके चलने और गर्जने से) दिशाओं के हाथी विचलित होकर चिंघाड़ रहे हैं ॥५॥

छं०—चिक्करहिं दिग्गज डोल महि,
गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष सभ गंधर्व सुर,
मुनि नाग किंनर दुख टरे॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट,
बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप,
कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥१॥

दिशाओं के हाथी चिंघाड़ने लगे, पृथ्वी डोलने लगी, पर्वत चंचल हो गये (कांपने लगे) और समुद्र खलबला उठे। गन्धर्व, देवता, मुनि, नाग, किन्नर सब-के-सब मन में हर्षित हुए कि [अब] हमारे दुःख टल गये। अनेकों करोड़ भयानक वानर योद्धा कटकटा रहे हैं और करोड़ों ही दौड़ रहे हैं। 'प्रबलप्रताप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोसल नाथ श्री रामचन्द्रजी की जय हो' ऐसा पुकारते हुए उनके गुण समूहों को गा रहे हैं ॥१॥

सहि सक न भार उदार,
अहिपति बार बारहिं मोहई।
गह दसन पुनि पुनि कमठ,
पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई।
रघुवीर रुचिर प्रयान,
प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज,
सो लिखत अविचल पावनी ॥२॥

उदार (परम श्रेष्ठ एवं महान्) सर्पराज शेषजी भी सेना का बोझ नहीं सह सकते, वे बार-बार मोहित हो जाते (घबड़ा जाते) हैं और पुनः-पुनः कच्छप की कठोर पीठ को दाँतों से पकड़ते हैं। ऐसा करते (अर्थात् बार-बार दाँतों को गड़ाकर कच्छप की पीठ पर लकीर-सी खींचते हुए) वे कैसे शोभा दे रहे हैं मानो श्री रामचन्द्रजी की सुन्दर प्रस्थान यात्रा को परम सुहावनी जानकर उसकी अचल पवित्र कथा को सर्पराज शेषजी कच्छप की पीठ पर लिख रहे हों।२।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—एहि बिधि जाइ कृपानिधि,
उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल,
भालु बिपुल कपि बीर ॥३४॥

इस प्रकार कृपानिधान श्री रामजी समुद्र तट पर जा उतरे। अनेकों रीछ-वानर वीर जहाँ-तहाँ फल खाने लगे ॥३४॥

चौ०—उहाँ निसाचर रहहिं ससंका।
जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा।
नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥१॥

वहाँ (लंका में) जब से हनुमान जी लंका को जलाकर गये; तब से राक्षस भयभीत रहने लगे। अपने-अपने घरों में सब विचार करते हैं कि अब राक्षस कुल की रक्षा [का कोई उपाय] नहीं है ॥१॥

जासु दूत बल बरनि न जाई।
तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी ।
मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥२॥

जिसके दूत का बल वर्णन नहीं किया जा सकता, उसके स्वयं नगर में आने पर कौन भलाई है (हम लोगों की बड़ी बुरी दशा होगी) ? दूतियों से नगर निवासियों के वचन सुनकर मन्दोदरी बहुत ही व्याकुल हो गयी ॥२॥

रहसि जोरि कर पति पग लागी ।
बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू ।
मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥३॥

वह एकान्त में हाथ जोड़ कर पति (रावण) के चरणों लगी और नीतिरस में पगी हुई वाणी बोली — हे प्रियतम ! श्री हरि से विरोध छोड़ दीजिये । मेरे कहने को अत्यन्त ही हितकर जानकर हृदय में धारण कीजिये ॥३॥

समुझत जासु दूत कइ करनी ।
स्त्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तासु नारि निज सचिव बोलाई।
पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥४॥

जिनके दूत की करनी का विचार करते ही (स्मरण आते ही) राक्षसों की स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं, हे प्यारे स्वामी ! यदि भला चाहते हैं, तो अपने मन्त्री को बुलाकर उसके साथ उसकी स्त्री को भेज दीजिए ॥४॥

तव कुल कमल विपिन दुखदाई।
सीता सीत निसा सम साई॥
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें।
हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥५॥

सीता आपके कुलरूपी कमलों के वन को दुःख देने वाली जाड़े की रात्रि के समान आयी है। हे नाथ ! सुनिये, सीता को दिये (लौटाये) बिना शंभु और ब्रह्मा जी के किये भी आपका भला नहीं हो सकता ॥५॥

दो०–राम बान अहि गन सरिस,
निकर निसाचर भेक।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब लगि ग्रसत न तब लगि,
जतनु करहु तजि टेक ॥३६॥

श्री रामजी के बाण सर्पों के समूह के समान हैं और राक्षसों के समूह मेंढक के समान। जब तक वे इन्हें ग्रस नहीं लेते (निगल नहीं जाते) तब तक हठ छोड़ कर उपाय कर लीजिये ॥३६॥

चौ०–श्रवन सुनी सठ ता करि बानी।
बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा।
मंगल महुं भय मन अति काचा ॥१॥

मूर्ख और जगत्प्रसिद्ध अभिमानी रावण कानों से उसकी वाणी सुन कर खूब हँसा [और बोला–] स्त्रियों का स्वभाव सचमुच ही बहुत डरपोक होता है। मङ्गल में भी भय करती हो। तुम्हारा मन (हृदय) बहुत ही कच्चा कमजोर है ॥१॥

जौं आवइ मर्कट कटकाई।
जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा।
तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि वानरों की सेना आवेगी तो बेचारे राक्षस उसे खाकर अपना जीवन निर्वाह करेंगे। लोकपाल भी जिसके डर से काँपते हैं, उसकी स्त्री डरती हो, यह बड़ी हँसी की बात है ॥२॥

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई।
चलेउ सभाँ ममता अधिकाई॥
मंदोदरी हृदयँ कर चिन्ता।
भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥३॥

रावण ने ऐसा कहकर हँसकर उसे हृदय से लगा लिया और ममता बढ़ाकर (अधिक स्नेह दर्शाकर) वह सभा में चला गया। मन्दोदरी हृदय में चिन्ता करने लगी कि पति पर विधाता प्रतिकूल हो गये ॥३॥

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई।
सिन्धु पार सेना सब आई॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू।
ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥४॥

ज्यों ही वह सभा में जाकर बैठा, उसने ऐसी खबर पायी कि शत्रु की सारी सेना समुद्र के उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार आ गई है। उसने मन्त्रियों से पूछा कि उचित सलाह कहिये [अब क्या करना चाहिये ?] तब वे सब हँसे और बोले कि चुप किये रहिये (इसमें सलाह की कौन सी बात है) ॥४॥

जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं।
नर बानर केहि लेखे माहीं ॥५॥

आपने देवताओं और राक्षसों को जीत लिया, तब तो कुछ श्रम ही नहीं हुआ। फिर मनुष्य और वानर किस गिनती में हैं ? ॥५॥

दो०—सचिव बैद गुर तीनि जौं,
प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर,
होइ बेगिहीं नास ॥३७॥

मन्त्री, वैद्य और गुरु—ये तीन यदि [अप्रसन्नता के] भय या [लाभ की] आशा से [हित की बात न कहकर] प्रिय बोलते हैं (ठकुर सुहाती कहने लगते हैं), तो [क्रमशः] राज्य, शरीर और धर्म—इन तीन का शीघ्र ही नाश हो जाता है ॥३७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०—सोइ रावन कहुं बनी सहाई।
अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा।
भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥१॥

रावण के लिये भी वही सहायता (संयोग) आ बनी है। मन्त्री उसे सुना सुनाकर (मुंह पर) स्तुति करते हैं। [इसी समय] अवसर जानकर विभीषण आये। उन्होंने बड़े भाई के चरणों में सिर नवाया।१।

पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन।
बोला बचन पाइ अनुसासन॥
जौं कृपाल पूंछिहु मोहि बाता।
मति अनुरूप कहउँ हित ताता॥२॥

फिर वे सिर नवाकर अपने आसन पर बैठ गये और आज्ञा पाकर ये वचन बोले—हे कृपालु! जब आपने मुझसे बात (राय) पूछी ही है, तो हे तात! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार आपके हित की बात कहता हूं—॥२॥

जो आपन चाहै कल्याना।
सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो परनारि लिलार गोसाईं ।
तजउ चउथि के चन्द की नाईं ॥३॥

जो मनुष्य अपना कल्याण, सुन्दर यश, सुबुद्धि, शुभ गति और नाना प्रकार के सुख चाहता हो, वह हे स्वामी ! परस्त्री के ललाट को चौथ के चन्द्रमा की तरह त्याग दे (अर्थात् जैसे लोग चौथ के चन्द्रमा को नहीं देखते, उसी प्रकार परस्त्री का मुख ही न देखे) ॥३॥

चौदह भुवन एक पति होई ।
भूत द्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ ।
अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥४॥

चौदहों भुवनों का एक ही स्वामी हो, वह भी जीवों से वैर करके ठहर नहीं सकता (नष्ट हो जाता है) । जो मनुष्य गुणों का समुद्र और चतुर हो, उसे चाहे थोड़ा भी लोभ क्यों न हो, तो भी कोई भला नहीं कहता ॥४॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब ।
नाथ नरक के पंथ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब परिहरि रघुबीरहि ।
भजहु भजहिं जेहि सन्त ॥३८॥

हे नाथ ! काम, क्रोध, मद और लोभ – ये सब नरक के रास्ते हैं। इन सबको छोड़कर श्री रामचन्द्र जी को भजिये, जिन्हें सन्त "सत्पुरुष" भजते हैं।३८।

चौ०—तात राम नहिं नर भूपाला ।
भुवनेश्वर कालहु कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता ।
व्यापक अजित अनादि अनंता ॥१॥

हे तात ! राम मनुष्यों के ही राजा नहीं हैं। वे समस्त लोकों के स्वामी और काल के भी काल हैं। वे "सम्पूर्ण ऐश्वर्य, यश, श्री, धर्म, वैराग्य एवं ज्ञान के भण्डार" भगवान हैं; वे निरामय "विकार रहित" अजन्मा, व्यापक, अजेय, अनादि और अनन्त ब्रह्म हैं ॥१॥

गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
कृपा सिन्धु मानुष तनुधारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता ।
बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन कृपा के समुद्र भगवान ने पृथ्वी, ब्राह्मण, गौ और देवताओं का हित करने के लिये ही मनुष्य, शरीर धारण किया है। हे भाई ! सुनिये, वे सेवकों को आनन्द देने वाले, दुष्टों के समूह का नाश करने वाले और वेद तथा धर्म की रक्षा करने वाले हैं ॥२॥

ताहि बयरु तजि नाइअ माथा।
प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहुं बैदेही।
भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥३॥

वैर त्याग कर उन्हें मस्तक नवाइये। वे श्रीरघुनाथ जी शरणागत का दुःख नाश करने वाले हैं। हे नाथ ! उन प्रभु "सर्वेश्वर" को जानकी जी दे दीजिये और बिना ही कारण स्नेह करने वाले श्रीराम जी को भजिये।

सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा।
बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन।
सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥४॥

जिसे सम्पूर्ण जगत से द्रोह करने का पाप लगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, शरण में जाने पर प्रभु उसका भी त्याग नहीं करते। जिनका नाम तीनों तापों का नाश करने वाला है, वे ही प्रभु "भगवान" मनुष्य रूप में ही प्रकट हुए हैं। हे रावण ! हृदय में यह समझ लीजिये ।।४।।

दो०—बार बार पद लागउँ,
बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद,
भजहु कोसलाधीस ॥३९ (क) ॥

हे दशशीश ! मैं बार बार आपके चरण लगता हूँ और विनती करता हूँ कि मान, मोह व मद को त्याग कर आप कोसलपति श्री राम जी का भजन कीजिए ।। ३९ (क) ।।

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन ।
कहि पठई यह बात ॥
तुरत सो मैं प्रभु सन कही ।
पाइ सुअवसरु तात ॥३९ (ख) ॥

मुनि पुलस्त्य जी नें अपने शिष्य के हाथ यह बात कहला भेजी है। हे तात ! सुन्दर अवसर पाकर मैंने तुरन्त ही वह बात प्रभु "आप" से कह दी ।। ३९ (ख) ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माल्यवंत अति सचिव सयाना।
तासु बचन सुनि अति सुख माना॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन।
सो उर धरहु जो कहत बिभीषन॥१॥

माल्यवान नाम का एक बहुत ही बुद्धिमान मंत्री था। उसने उन 'बिभीषन' के वचन सुनकर बहुत सुख माना 'और कहा—' हे तात ! आपके छोटे भाई नीति-बिभूषण 'नीति को भूषण रूप में धारण करने वाले अर्थात नीतिमान' हैं। विभीषण जो कुछ कह रहे हैं उसे हृदय में धारण कर लीजिये ॥१॥

रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ।
दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी।
कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी॥२॥

'रावण ने कहा—' ये दोनों मूर्ख शत्रु की महिमा बखान कर रहे हैं। यहां कोई है ? इन्हें दूर करो न ! तब माल्यवान तो घर लौट आया और विभीषण जी हाथ जोड़कर फिर कहने लगे—॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुमति कुमति सब के उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपत्ति निदाना ॥३॥

हे नाथ ! पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि सुबुद्धि 'अच्छी बुद्धि' और कुबुद्धि 'खोटी बुद्धि' सबके हृदय में रहती हैं, जहां सुबुद्धि है, वहाँ नाना प्रकार की सम्पदाएँ 'सुख की स्थिति' रहती हैं और जहां कुबुद्धि है, वहां परिणाम में विपत्ति 'दुःख' रहती है ॥३॥

तव उर कुमति बसी बिपरीता ।
हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचर कुल केरी ।
तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥४॥

आपके हृदय में उलटी बुद्धि आ बसी है । इसी से आप हित को अहित और शत्रुओं को मित्र मान रहे हैं । जो राक्षसकुल के लिये कालरात्रि 'के समान' हैं, उन सीता पर आपकी बड़ी प्रीति है ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—तात चरन गहि मागउँ।
राखहु मोर दुलार॥
सीता देहु राम कहुं।
अहित न होइ तुम्हार॥४०॥

हे तात ! मैं चरण पकड़कर आपसे भीख मांगता हूं 'विनती करता हूं' कि आप मेरा दुलार रखिये 'मुझ बालक के आग्रह को स्नेहपूर्वक स्वीकार कीजिये'। श्री राम जी को सीताजी दे दीजिये, जिससे आपका अहित न हो॥४०॥

चौ०—बुध पुरान श्रुति संमत बानी।
कही बिभीषन नीति बखानी॥
सुनत दसानन उठा रिसाई।
खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥१॥

विभीषण ने पण्डितों, पुराणों और वेदों द्वारा समस्त (अनुमोदित) वाणी से नीति बखान कर कही। पर उसे सुनते ही रावण क्रोधित होकर उठा और बोला कि रे दुष्ट ! अब मृत्यु तेरे निकट आ गयी है॥१॥

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा।
रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहसि न खल अस को जग माहीं ।
भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥२॥

अरे मूर्ख ! तू जीता तो है सदा मेरा जिलाया हुआ (अर्थात् मेरे ही अन्न से पल रहा है) पर हे मूढ़ ! पक्ष तुझे शत्रु का ही अच्छा लगता है । अरे दुष्ट ! बता न, जगत् में ऐसा कौन है जिसे मैंने अपनी भुजाओं के बल से न जीता हो ? ॥२॥

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती ।
सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।
अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥३॥

मेरे नगर में रहकर प्रेम करता है तपस्वियों पर । मूर्ख ! उन्हीं से जा मिल और उन्हीं को नीति बता । ऐसा कहकर रावण ने उन्हें लात मारी । परन्तु छोटे भाई विभीषण ने (मारने पर भी) बार-२ उसके चरण ही पकड़े ॥३॥

उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।
मंद करत जो करइ भलाई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा।
रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥४॥

(शिवजी कहते हैं—) हे उमा ! सन्त की यही बड़ाई (महिमा) है कि वे बुराई करने पर भी (बुराई करने वाले की) भलाई ही करते हैं। (विभीषण जी ने कहा—) आप मेरे पिता के समान हैं, मुझे मारा सो तो अच्छा ही किया; परन्तु हे नाथ ! आपका भला श्री राम जी को भजने में ही है ॥४॥

सचिव संग लै नभ पथ गयऊ।
सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥५॥

(इतना कहकर) विभीषण अपने मन्त्रियों को साथ लेकर आकाश मार्ग में गए और सबको सुनाकर वे ऐसा कहने लगे— ॥५॥

दो०-रामु सत्य संकल्प प्रभु।
सभा कालबस तोरि॥
मैं रघुबीर सरन अब।
जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥

श्री राम जी सत्यसंकल्प एवं (सर्वसमर्थ) प्रभु हैं और (हे रावण !) तुम्हारी सभा काल के वश है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतः मैं श्री रघुवीर को शरण जाता हूँ, मुझे दोष न देना ॥४१॥

चो०—अस कहि चला बिभीषनु जबहीं ।
आयू हीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी ।
कर कल्यान अखिल कै हानी ॥१॥

ऐसा कहकर विभीषण ज्यों ही चले, त्यों ही सब राक्षस आयुहीन हो गये (उनकी मृत्यु निश्चित हो गई)। (शिवजी कहते हैं—) हे भवानी ! साधु का अपमान तुरन्त ही सम्पूर्ण कल्याण की हानि (नाश) कर देता है ॥१॥

रावन जबहिं बिभीषन त्यागा ।
भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं ।
करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥२॥

रावण ने जिस क्षण विभीषण को त्यागा, उसी क्षण वह अभागा वैभव (ऐश्वर्य) से हीन हो गया। विभीषण जी हर्षित होकर मन में अनेकों मनोरथ करते हुए श्री रघुनाथ जी के पास चले ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखिहउँ जाइ चरन जलजाता।
अरुन मृदुल सेवक सुखदाता॥
जे पद परसि तरी ऋषिनारी।
दंडक कानन पावनकारी॥३॥

(वे सोचते जाते थे –) मैं जाकर भगवान के कोमल और लाल वर्ण के सुन्दर चरण कमलों के दर्शन करूँगा, जो सेवकों को सुख देने वाले हैं, जिन चरणों का स्पर्श पाकर ऋषि पत्नी अहिल्या तर गयीं और जो दण्डकवन को पवित्र करने वाले हैं॥३॥

जे पद जनक सुताँ उर लाए।
कपट कुरंग संग धर धाए॥
हर उर सर सरोज पद जेई।
अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई॥४॥

जिन चरणों को जानकी जी ने हृदय में धारण कर रक्खा है, जो कपट मृग के साथ पृथ्वी पर [उसे पकड़ने को] दौड़े थे और जो चरण कमल साक्षात् शिवजी के हृदय रूपी सरोवर में विराजते हैं, मेरा अहोभाग्य है कि उन्हीं को आज मैं देखूँगा॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०-जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि। भरतु रहे मन लाइ॥
ते पद आजु बिलोकिहउँ। इन्ह नयनन्हि अब जाइ॥४२॥

जिन चरणों की पादुकाओं में भरत जी ने अपना मन लगा रक्खा है, आह! आज मैं उन्हीं चरणों को अभी जाकर इन नेत्रों से देखूँगा॥४२॥

चौ०—एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आयउ सपदि सिन्धु एहिं पारा॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा॥१॥

इस प्रकार प्रेम सहित विचार करते हुए वे शीघ्र ही समुद्र के इस पार (जिधर श्री रामचन्द्र जी की सेना थी) आ गये। वानरों ने विभीषण को आते देखा तो उन्होंने जाना कि शत्रु का कोई खास दूत है॥१॥

ताहि राखि कपीस पहिं आए। समाचार सब ताहि सुनाए॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ।
आवा मिलन दसानन भाई ॥२॥

उन्हें (पहरे पर) ठहरा कर वे सुग्रीव के पास आये और उनको सब समाचार कह सुनाए । सुग्रीव ने (श्री राम जी के पास जाकर) कहा हे रघुनाथ जी ! सुनिए, रावण का भाई [आपसे] मिलने आया है ॥२॥

कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा ।
कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया ।
कामरूप केहि कारन आया ॥३॥

प्रभु श्री राम जी ने कहा—हे मित्र ! तुम क्या समझते हो (तुम्हारी क्या राय है) ? वानर राज सुग्रीव ने कहा—हे महाराज ! सुनिये, राक्षसों की माया जानी नहीं जाती । यह इच्छानुसार रूप बदलने वाला (छली) न जाने किस कारण आया है ॥३॥

भेद हमार लेन सठ आवा ।
राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी।
मम पन सरनागत भयहारी ॥४॥

[जान पड़ता है] यह मूर्ख हमारा भेद लेने आया है, इसलिये मुझे तो यही अच्छा लगता है कि इसे बाँध कर रक्खा जाय। [श्री राम जी ने कहा-] हे मित्र! तुमने नीति तो अच्छी विचारी। परन्तु मेरा प्रण तो यह है शरणागत के भय को हर लेना! ॥४॥

सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना।
सरनागत बच्छल भगवाना ॥५॥

प्रभु के वचन सुन कर हनुमान जी हर्षित हुए [और मन-ही-मन कहने लगे कि] भगवान कैसे शरणागत वत्सल (शरण में आये हुए पर पिता की भाँति प्रेम करने वाले) हैं ॥५॥

दो०—सरनागत कहुँ जे तजहिं।
निज अनहित अनुमानि ॥
ते नर पावँर पापमय।
तिन्हहि बिलोकत हानि ॥४३॥

[श्री राम जी फिर बोले—] जो मनुष्य अपने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहित का अनुमान करके शरण में आये हुए का त्याग कर देते हैं; वे पामर (क्षुद्र) हैं, पापमय हैं; उन्हें देखने में भी हानि है (पाप लगता है) ॥४३॥

चौ०—कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू।
आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं।
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥१॥

जिसे करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या लगी हो, शरण में आने पर मैं उसे भी नहीं त्यागता। जीव ज्यों ही मेरे सम्मुख होता है, त्यों ही उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं ॥१॥

पापवन्त कर सहज सुभाऊ।
भजनु मोर तेहि भाव न काऊ॥
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई।
मोरें सनमुख आव कि सोई॥२॥

पापी का यह सहज स्वभाव होता है कि मेरा भजन उसे कभी नहीं सुहाता। यदि वह (रावण का भाई) निश्चय ही दुष्ट हृदय का होता तो क्या वह मेरे सम्मुख आ सकता था? ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा ।
तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥३॥

जो मनुष्य निर्मल मन का होता है, वही मुझे पाता है । मुझे कपट और छल-छिद्र नहीं सुहाते । यदि रावण ने उसे भेद लेने को भेजा है, तब भी हे सुग्रीव! अपने को कुछ भी भय या हानि नहीं है ।३।

जग महुं सखा निसाचर जेते ।
लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जौं सभीत आवा सरनाई ।
रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ॥४॥

क्योंकि हे सखे ! जगत् में जितने भी राक्षस हैं, लक्ष्मण क्षणभर में उन सबको मार सकते हैं और यदि वह भयभीत होकर मेरे शरण आया है तो मैं उसे प्राणों की तरह रखूँगा ॥४॥

दो०–उभय भांति तेहि आनहु ।
हँसि कह कृपानिकेत ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जय कृपाल कहि कपि चले।
अंगद हनू समेत ॥४४॥

कृपा के धाम श्री राम जी ने हँसकर कहा—दोनों ही स्थितियों में उसे ले आओ। तब अंगद और हनुमान सहित सुग्रीवजी कृपालु श्रीराम की 'जय हो' कहते हुए चले ॥४४॥

चौ०—सादर तेहि आगें करि बानर।
चले जहां रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता।
नयनानंद दान के दाता ॥१॥

विभीषण को आदर सहित आगे करके वानर फिर वहाँ चले जहाँ करुणा की खान श्री रघुनाथ जी थे। नेत्रों को आनन्द का दान देने वाले (अत्यन्त सुखद) दोनों भाइयों को विभीषण जी ने दूर ही से देखा ॥१॥

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी।
रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥
भुज प्रलम्ब कंजारुन लोचन।
स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर शोभा के धाम श्री राम जी को देखकर वे पलक [मारना] रोक कर ठिठककर (स्तब्ध होकर) एकटक देखते ही रह गये। भगवान की विशाल भुजाएँ हैं, लाल कमल के समान नेत्र हैं और शरणागत के भय का नाश करने वाला सांवला शरीर है ॥२॥

सिंघ कंध आयत उर सोहा।
आनन अमित मदन मन मोहा॥
नयन नीर पुलकित अति गाता।
मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥३॥

सिंह के से कन्धे हैं, विशाल वक्षःस्थल (चौड़ी छाती) अत्यन्त शोभा दे रही है। असंख्य कामदेवों के मन को मोहित करने वाला मुख है। भगवान के स्वरूप को देखकर विभीषण जी के नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं का) जल भर आया और शरीर अत्यन्त पुलकित हो गया। फिर मन में धीरज धरकर उन्होंने कोमल वचन कहे ॥३॥

नाथ दसानन कर मैं भ्राता।
निसिचर बंस जनम सुरत्राता॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहज पापप्रिय तामस देहा।
जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥४॥

हे नाथ ! मैं दशमुख रावण का भाई हूं। हे देवताओं के रक्षक ! मेरा जन्म राक्षस कुल में हुआ है। मेरा तामसी शरीर है, स्वभाव से ही मुझे पाप प्रिय है, जैसे उल्लू को अन्धकार पर सहज स्नेह होता है ॥४॥

दो०–श्रवन सुजसु सुनि आयउँ।
प्रभु भंजन भव भीर ॥
त्राहि त्राहि आरति हरन।
सरन सुखद रघुबीर ॥४५॥

मैं कानों से आपका सुयश सुनकर आया हूँ कि प्रभु भव "जन्म मरण" के भय का नाश करने वाले हैं। हे दुखियों के दुःख दूर करने वाले और शरणागत को सुख देने वाले श्री रघुवीर ! मेरी रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिए ॥४५॥

चौ०–अस कहि करत दंडवत देखा।
तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा ।
भुज बिसाल कहि हृदयँ लगावा ॥१॥

प्रभु ने उन्हें ऐसा कहकर दण्डवत् करते देखा तो वे अत्यन्त हर्षित होकर तुरन्त उठे । विभीषण जी के दीन वचन सुनने पर प्रभु के मन को बहुत ही भाये । उन्होंने अपनी विशाल भुजाओं से पकड़ कर उनको हृदय से लगा लिया ॥१॥

अनुज सहित मिलि ढिंग बैठारी ।
बोले बचन भगत भय हारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा
कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥२॥

छोटे भाई लक्ष्मण जी सहित गले मिलकर उनको अपने पास बैठाकर श्री राम जी भक्तों के भय को हरने वाले वचन बोले–हे लंकेश ! परिवार सहित अपनी कुशल कहो । तुम्हारा निवास बुरी जगह पर है ॥२॥

खल मंडली बसहु दिनु राती ।
सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती।
अति नय निपुन न भाव अनीती ॥३॥

दिन रात दुष्टों की मंडली में बसते हो। "ऐसी दशा में" हे सखे ! तुम्हारा धर्म किस प्रकार निभता है ? मैं तुम्हारी सब रीति "आचार व्यवहार" जानता हूँ। तुम अत्यन्त नीति निपुण हो, तुम्हें अनीति नहीं सुहाती ॥४॥

बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया।
जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥४॥

हे तात ! नरक में रहना अच्छा है, परन्तु विधाता दुष्ट का संग (कभी) न दे। 'विभीषण जी ने कहा—' हे रघुनाथ जी ! अब आपके चरणों का दर्शन कर कुशल से हूँ, जो आपने अपना सेवक जान कर मुझ पर दया की है ॥४॥

दो०—तब लगि कुसल न जीव कहुं।
सपनेहुं मन विश्राम ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब लगि भजत न राम कहुं।
सोक धाम तजि काम ॥४६॥

तब तक जीव की कुशल नहीं और न स्वप्न में भी उसके मन को शान्ति है, जब तक वह शोक के घर काम 'विषय कामना' को छोड़कर श्रीरामजी को नहीं भजता ॥४६॥

चौ०-तब लगि हृदयँ बसत खल नाना।
लोभ मोह मत्सर मद माना॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा।
धरें चाप सायक कटि भाथा ॥१॥

लोभ, मोह, मत्सर 'डाह' मद और मान आदि अनेकों दुष्ट तभी तक हृदय में बसते हैं, जब तक कि धनुष और बाण और कमर में तरकस धारण किए हुए श्री रघुनाथ जी हृदय में नहीं बसते ॥१॥

ममता तरुन तमी अँधिआरी।
राग द्वेष उलूक सुखकारी॥
तब लगि बसति जीव मन माहीं।
जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ममता पूर्ण अंधेरी रात है, जो राग द्वेष-रूपी उल्लुओं को सुख देने वाली है। वह 'ममतारूपी रात्रि' तभी तक जीव के मन में बसतीहै, जब तक प्रभु 'आप' का प्रतापरूपी सूर्य उदय नहीं होता ॥२॥

अब मैं कुसल मिटे भय भारे।
देखि रामपद कमल तुम्हारे॥
तुम्ह कृपाल जापर अनुकूला।
ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥३॥

हे श्रीराम जी ! आपके चरणारविन्द के दर्शन कर अब मैं कुशल से हूं, मेरे भारी भय मिट गये। हे कृपालु ! आप जिस पर अनुकूल होते हैं। उसे तीनों प्रकार के भवशूल 'आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ताप' नहीं व्यापते ॥३॥

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ।
सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा।
तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥४॥

मैं अत्यन्त नीच स्वभाव का राक्षस हूं। मैंने कभी शुभ आचरण नहीं किया। जिनका रूप मुनियों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के भी ध्यान में नहीं आता, उन प्रभु ने स्वयं हर्षित होकर मुझे हृदय से लगा लिया।

दो०—अहोभाग्य मम अमित अति।
राम कृपा सुख पुंज॥
देखेउँ नयन बिरंचि सिव।
सेव्य जुगल पद कंज॥४७॥

हे कृपा और सुख के पुंज श्री राम जी! मेरा अत्यन्त असीम सौभाग्य है, जो मैंने ब्रह्मा और शिव जी के द्वारा सेवित युगल चरणकमलों को अपने नेत्रों से देखा॥४७॥

चौ०—सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ।
जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ॥
जौं नर होई चराचर द्रोही।
आवै सभय सरन तकि मोही॥१॥

(श्री राम जी ने कहा—) हे सखा! मैं तुम्हें अपना स्वभाव कहता हूं, जिसे काकभुशुण्डि, शिव जी और पार्वती जी भी जानती हैं। कोई मनुष्य 'सम्पूर्ण' जड़ चेतन जगत का द्रोही हो, यदि वह भी भयभीत होकर मेरी शरण तक कर आ जाय॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तजि मद मोह कपट छल नाना ।
करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बन्धु सुत दारा ।
तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥२॥

और मद, मोह तथा नाना प्रकार के छल-कपट त्याग दे तो मैं उसे बहुत शीघ्र साधु के समान कर देता हूं । माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार ॥२॥

सब कै ममता ताग बटोरी ।
मम पद मनहिं बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं ।
हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥३॥

इन सबके ममत्वरूपी तागों को बटोर कर और उन सबकी एक डोरी बटकर उसके द्वारा जो अपने मन को मेरे चरणों में बांध देता है 'सारे साँसारिक सम्बन्धों का केन्द्र मुझे बना लेता है' जो समदर्शी है, जिसे कुछ इच्छा नहीं है और जिसके मन में हर्ष, शोक और भय नहीं है ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस सज्जन मम उर बस कैसें ।
लोभी हृदयँ बसहु धनु जैसें ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें ।
धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥४॥

ऐसा सज्जन मेरे हृदय में कैसे बसता है, जैसे लोभी के हृदय में धन बसा करता है। तुम सरीखे संत ही मुझे प्रिय हैं। मैं और किसी के निहोरे से 'कृतज्ञतावश' देह धारण नहीं करता ॥४॥

दो०—सगुन उपासक परहित,
निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम,
जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥४८॥

जो सगुण (साकार) भगवान के उपासक हैं, दूसरों के हित में लगे रहते हैं, नीति और नियमों में दृढ़ हैं और जिन्हें ब्राह्मण के चरणों में प्रेम है, वे मनुष्य मेरे प्राणों के समान हैं ॥४८॥

चौ०—सुनु लंकेस सकल गुन तोरें ।
तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम बचन सुनि बानर जूथा ।
सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥१॥

हे लंकापति ! सुनो, तुम्हारे अन्दर उपर्युक्त सब गुण हैं । इससे तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो । श्री राम जी के वचन सुन कर सब वानरों के समूह कहने लगे—कृपा के समूह श्री राम जी की जय हो ॥१॥

सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी ।
नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा ।
हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥२॥

प्रभु की वाणी सुनते हैं और उसे कानों के लिए अमृत जानकर विभीषण जी अघाते नहीं हैं । वे बार-बार श्री राम जी के चरण कमलों को पकड़ते हैं । अपार प्रेम है, हृदय में समाता नहीं है ॥२॥

सुनहु देव सचराचर स्वामी ।
प्रनतपाल उर अन्तरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही ।
प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(विभीषण जी ने कहा—) हे देव ! हे चराचर जगत् के स्वामी ! हे शरणागत के रक्षक ! हे सबके हृदय के भीतर की जानने वाले ! सुनिए । मेरे हृदय में पहले कुछ वासना थी, वह प्रभु के चरणों की प्रीतिरूपी नदी में बह गई ॥३॥

अब कृपाल निज भगति पावनी ।
देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा ।
मांगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥४॥

अब तो हे कृपालु ! शिव जी के मन को सदैव प्रिय लगने वाली अपनी पवित्र भक्ति मुझे दीजिये । 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कह कर रणधीर प्रभु श्री राम जी ने तुरन्त ही समुद्र का जल मांगा ॥४॥

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं ।
मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा ।
सुमन वृष्टि नभ भई अपारा ॥५॥

[और कहा—] हे सखा ! यद्यपि तुम्हारी इच्छा नहीं है, पर जगत में मेरा दर्शन अमोघ है (वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निष्फल नहीं जाता) ऐसा कह कर श्री राम जी ने उनको राजतिलक कर दिया। आकाश से पुष्पों की अपार वृष्टि हुई ॥५॥

दो०—रावन क्रोध अनल निज।
स्वास समीर प्रचण्ड ॥
जरत बिभीषनु राखेउ।
दीन्हेउ राजु अखण्ड ॥ ४९(क) ॥

श्री राम जी ने रावण के क्रोधरूपी अग्नि में, जो अपनी (विभीषण की) श्वांस (वचन) रूपी पवन से प्रचण्ड हो रही थी, जलते हुए विभीषण को बचा लिया और उसे अखंड राज्य दिया ॥४९(क)॥

जो सम्पत्ति सिव रावनहि।
दीन्हि दिएँ दस माथ ॥
सोइ सम्पदा बिभीषनहि।
सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥ ४९ (ख) ॥

शिवजी ने जो सम्पत्ति रावण को दसों सिर देने पर दी थी, वही सम्पत्ति श्री रघुनाथ जी ने बहुत सकुचते हुए दी ॥४९(ख)॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०--अस प्रभु छांड़ि भजहिं जे आना ।
ते नर पसु बिन पूंछ विषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा ।
प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥१॥

ऐसे परम कृपालु प्रभु को छोड़ कर जो मनुष्य दूसरे को भजते हैं, वे बिना सींग-पूँछ के पशु हैं। अपना सेवक जान कर विभीषण को श्री राम जी ने अपना लिया। प्रभु का स्वभाव वानर कुल के मन को (बहुत) भाया ॥१॥

पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी ।
सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक ।
कारन मनुज दनुज कुलघालक ॥३॥

फिर सब कुछ जानने वाले, सबके हृदय में बसने वाले, सर्वरूप (सब रूपों में प्रकट), सबसे रहित, उदासीन, कारण से (भक्तों पर कृपा करने के लिए) मनुष्य बने हुए तथा राक्षसों के कुल का नाश करने वाले श्री राम जी नीति की रक्षा करने वाले वचन बोले--॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनु कपीस लंकापति वीरा।
केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा॥
संकुल मकर उरग झष जाती।
अति अगाध दुस्तर सब भाँती॥३॥

हे वीर वानर राज सुग्रीव और लंकापति विभीषण! सुनो, इस गहरे समुद्र को किस प्रकार पार किया जाय? अनेक जाति के मगर, सांप और मछलियों से भरा हुआ यह अत्यन्त अथाह समुद्र पार करने में सब प्रकार से कठिन है॥३॥

कह लंकेस सुनहु रघुनायक।
कोटि सिंधु सोषक तव सायक॥
जद्यपि तदपि नीति अस गाई।
बिनय करिअ सागर सन जाई॥

विभीषण जी ने कहा—हे रघुनाथ जी! सुनिए, यद्यपि आपका एक बाण ही करोड़ों समुद्रों को सोखने वाला है (सोख सकता है), तथापि नीति ऐसी कही गई है (उचित यह होगा) कि (पहले) जाकर समुद्र से प्रार्थना की जाए॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०-प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि ।
कहिहि उपाय बिचारि ॥
बिनु प्रयास सागर तरिहि ।
सकल भालु कपि धारि ॥५०॥

हे प्रभु ! समुद्र आपके कुल में बड़े (पूर्वज) हैं; वे विचार कर उपाय बतला देंगे । तब रीछ और वानरों की सारी सेना बिना ही परिश्रम के समुद्र के पार उतर जाएगी ॥५०॥

चौ०-सखा कही तुम नीकि उपाई ।
करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा ।
राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥१॥

[श्री राम जी ने कहा—] हे सखा ! तुमने अच्छा उपाय बताया । यही किया जाए, यदि दैव सहायक हों । यह सलाह लक्ष्मण जी के मन को अच्छी नहीं लगी । श्री राम जी के वचन सुनकर तो उन्होंने बहुत ही दुःख पाया ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाथ दैव कर कवन भरोसा ।
सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कहुं एक अधारा ।
दैव दैव आलसी पुकारा ॥

[लक्ष्मण जी ने कहा—] हे नाथ ! दैव का कौन भरोसा । मन में क्रोध कीजिए (ले आइए) और समुद्र को सुखा डालिए । यह दैव तो कायर के मन का एक आधार (तसल्ली देने का उपाय) है आलसी लोग ही दैव-२ पुकारा करते हैं ॥२॥

सुनत बिहसि बोले रघुबीरा ।
ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई ।
सिंधु समीप गए रघुराई ॥३॥

यह सुनकर श्री रघुवीर हँस कर बोले—ऐसे ही करेंगे मन में धीरज रखो, ऐसा कह कर छोटे भाई को समझा कर प्रभु श्री रघुनाथ जी समुद्र के समीप गए ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम प्रनाम कीन्ह सिर नाई।
बैठे पुनि तट दर्भ डसाई॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए।
पाछें रावन दूत पठाये॥४॥

उन्होंने पहले सिर नवाकर प्रणाम किया। फिर किनारे पर कुश बिछा कर बैठ गये। इधर ज्यों ही विभीषण जी प्रभु के पास आए थे, त्यों ही रावण ने उनके पीछे दूत भेजे थे॥४॥

दो०-सकल चरित तिन्ह देखे।
धरें कपट कपि देह॥
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं।
सरनागत पर नेह॥५१॥

कपट से वानर का शरीर धारण कर उन्होंने सब लीलाएं देखीं। वे अपने हृदय में प्रभु के गुणों की और शरणागत पर उनके स्नेह की सराहना करने लगे॥५१॥

चौ०-प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ।
अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने।
सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥१॥

फिर वे प्रकट रूप में अत्यन्त प्रेम के साथ श्री राम जी के स्वभाव की बड़ाई करने लगे, उन्हें दुराव (कपट-वेष) भूल गया। तब वानरों ने जाना कि ये शत्रु के दूत हैं और वे उन सबको बांध कर सुग्रीव के पास ले आए ॥१॥

कह सुग्रीव सुनहु सब बानर।
अंग भंग करि पठवहु निसिचर॥

सुनि सुग्रीव वचन कपि धाए।
बाँधि कटक चहु पास फिराए॥२॥

सुग्रीव ने कहा—सब वानरों! सुनो, राक्षसों के अङ्ग-भङ्ग करके भेज दो। सुग्रीव के वचन सुन कर वानर दौड़े। दूतों को बांधकर उन्होंने सेना के चारों ओर घुमाया ॥२॥

बहु प्रकार मारन कपि लागे।
दीन पुकारत तदपि न त्यागे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो हमार हर नासा काना।
तेहि कोसलाधीस कै आना॥

वानर उन्हें बहुत तरह से मारने लगे। वे दीन होकर पुकारते थे, फिर भी वानरों ने उन्हें नहीं छोड़ा। (तब दूतों ने पुकार कर कहा—) जो हमारे नाक-कान काटेगा, उसे कोसलाधीस श्री राम जी की सौगंध है ॥३॥

सुनि लछिमन सब निकट बोलाए।
दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए॥
रावन कर दीजहु यह पाती।
लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥४॥

यह सुन कर श्री लक्ष्मण जी ने सबको निकट बुलाया। उन्हें बड़ी दया लगी, इससे हँस कर उन्होंने राक्षसों को तुरन्त ही छुड़ा दिया। [और उनसे कहा] रावण के हाथ में यह चिट्ठी देना [और कहना—] हे कुलघातक ! लक्ष्मण जी के शब्दों (संदेश) को बाँचो ॥४॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन।
मम संदेसु उदार॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता देइ मिलहु न त।
आवा कालु तुम्हार ॥५२॥

फिर उस मूर्ख से जबानी यह मेरा उदार (कृपा से भरा हुआ) संदेश कहना कि सीता जी को देकर उनसे (श्री राम से) मिलो, नहीं तो तुम्हारा काल आ गया [समझो) ॥५२॥

चौ०–तुरत नाइ लछिमन पद माथा।
चले दूत बरनत गुन गाथा॥
कहत राम जसु लंकाँ आए।
रावन चरन सीस तिन्ह नाए॥१॥

लक्ष्मण जी के चरणों में मस्तक नवा कर, श्री राम जी के गुणों का वर्णन करते हुए दूत तुरन्त ही चल दिए। श्री राम जी का यश कहते हुए वे लंका में आए। और उन्होंने रावण के चरणों में सिर नवाया ॥१॥

बिहसि दसानन पूँछी बाता।
कहसि न सुक आपनि कुसलाता॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी।
जाहि मृत्यु आई अति नेरी॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशमुख रावण ने हँसकर बात पूछी—अरे शुक ! अपनी कुशलता क्यों नहीं कहता ? फिर उस विभीषण का समाचार सुना, मृत्यु जिसके अत्यन्त निकट आ गई है ॥२॥

करत राज लंका सठ त्यागी ।
होइहि जव कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई ।
कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥३॥

मूर्ख ने राज्य करते हुए लंका को त्याग दिया । अभागा अब जौ का कीड़ा (घुन) बनेगा (जौ के साथ जैसे घुन भी पिस जाता है, वैसे ही नर वानरों के साथ वह भी मारा जाएगा); फिर भालु और वानरों की सेना का हाल कह, जो कठिन काल की प्रेरणा से यहां चली आई है ॥३॥

जिन्ह के जीवन कर रखवारा ।
भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी ।
जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी ॥४॥

और जिनके जीवन का रक्षक कोमल चित्त वाला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेचारा समुद्र बन गया है (अर्थात उनके और राक्षसों के बीच में यदि समुद्र न होता तो अब तक राक्षस उन्हें मार कर खा गये होते)। फिर उन तपस्वियों की बात बता, जिनके हृदय में मेरा बहुत बड़ा डर है ॥४॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए।
श्रवन सुजसु सुनि मोर॥
कहसि न रिपु दल तेज बल।
बहुत चकित चित तोर ॥५३॥

उनसे तेरी भेंट हुई या वे कानों से मेरा सुयश सुनकर ही लौट गये ? शत्रु कीसेना का तेज और बल बताता क्यों नहीं ? तेरा चित्त बहुत ही चकित (भौंचक्का-सा) हो रहा है ॥५३॥

चौ०—नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें।
मानहु कहा क्रोध तजि तैसें॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा।
जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥१॥

(दूत ने कहा—) हे नाथ ! आपने जैसे कृपा करके पूछा है, वैसे ही क्रोध छोड़ कर मेरा कहना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानिये (मेरी बातों पर विश्वास कीजिए)। जब आपका छोटा भाई श्री राम जी से जाकर मिला, तब उसके पहुंचते ही श्री राम जी ने उसको राजतिलक कर दिया ॥१॥

रावन दूत हमहि सुनि काना।
कपिन्ह बाँधि दीन्हें दुख नाना॥
श्रवन नासिका काटैं लागे।
राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥२॥

हम रावण के दूत हैं, यह कानों से सुनकर वानरों ने हमें बाँध कर बहुत कष्ट दिए, यहाँ तक कि वे हमारे नाक-कान काटने लगे। श्री राम जी की शपथ दिलाने पर कहीं उन्होंने हमको छोड़ा ॥२॥

पूंछिहु नाथ राम कटकाई।
बदन कोटि सत बरनि न जाई॥
नाना बरन भालु कपि धारी।
बिकटानन बिसाल भयकारी ॥३॥

हे नाथ! आपने श्री राम जी की सेना पूछी; सो वह तो सौ करोड़ मुखों से भी वर्णन नहीं की जा सकती। अनेकों रंगों के भालु और वानरों की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेना है, जो भयंकर मुख वाले, विशाल शरीर वाले और भयानक हैं ।।३।।

जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा ।
सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला ।
अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥४॥

जिसने नगर को जलाया और आपके पुत्र अक्षय कुमार को मारा, उसका बल तो सब वानरों में थोड़ा है । असंख्य नामों वाले बड़े ही कठोर और भयंकर योद्धा हैं । उनमें असंख्य हाथियों का बल है और वे बड़े ही विशाल हैं ।।४।।

दो०—द्विबिद मयंद नील नल ।
अंगद गद बिकटासि ॥
दधिमुख केहरि निसठ सठ ।
जामवन्त बलरासि ॥५४॥

द्विविद, मयंद, नील, नल, अंगद, गद, विकटास्य दधिमुख, केसरी, निशठ, शठ और जाम्बवान्—ये सभी बल की राशि हैं ।।५४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०—ए कपि सब सुग्रीव समाना।
इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना॥
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं।
तृन समान त्रैलोकहिं गनहीं॥१॥

ये सब वानर बल में सुग्रीव के समान हैं और इनके जैसे (एक-दो नहीं) करोड़ों हैं; उन बहुत सों को कौन गिन सकता है? श्री राम जी की कृपा से उनमें अतुलनीय बल है। वे तीनों लोकों को तृण के समान (तुच्छ) समझते हैं॥१॥

अस मैं सुना श्रवन दसकंधर।
पदुम अठारह जूथप बन्दर॥
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं।
जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं॥२॥

हे दशग्रीव! मैंने कानों से ऐसा सुना है कि अठारह पद्म तो अकेले वानरों के सेनापति हैं। हे नाथ! उस सेना में ऐसा कोई वानर नहीं है, जो आपको रण में न जीत सके॥२॥

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा।
आयसु पै न देहिं रघुनाथा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला।
पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥३॥

सब के सब अत्यन्त क्रोध से हाथ मींजते हैं। पर श्री रघुनाथ जी उन्हें आज्ञा नहीं देते। हम मछलियों और साँपों सहित समुद्र को सोख लेंगे। नहीं तो बड़े बड़े पर्वतों से उसे भर कर पूर (पाट) देंगे ॥३॥

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा।
ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका।
मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका ॥४॥

और रावण को मसल कर धूल में मिला देंगे। सब वानर ऐसे ही वचन कह रहे हैं। सब सहज ही निडर हैं; इस प्रकार गरजते और डपटते हैं मानो लंका को निगल ही जाना चाहते हैं ॥४॥

दो०—सहज सूर कपि भालु सब।
पुनि सिर पर प्रभु राम॥
रावन काल कोटि कहुं।
जीति सकहिं संग्राम ॥५५॥

सब वानर भालू सहज ही शूरवीर हैं, फिर उनके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिर पर प्रभु (सर्वेश्वर) श्री राम जी हैं। हे रावण! वे संग्राम में करोड़ों कालों को जीत सकते हैं ॥५५॥

चौ०—राम तेज बल बुद्धि बिपुलाई।
सेष सहस सत सकहिं न गाई॥
सक सर एक सोषि सत सागर।
तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर॥१॥

श्री रामचन्द्र जी के तेज (सामर्थ्य), बल और बुद्धि की अधिकता को लाखों शेष भी नहीं गा सकते। वे एक ही बाण से सैकड़ों समुद्रों को सोख सकते हैं, परन्तु नीति निपुण श्री राम जी ने (नीति की रक्षा के लिये) आपके भाई से उपाय पूछा ॥१॥

तासु बचन सुनि सागर पाहीं।
मागत पंथ कृपा मन माहीं॥
सुनत बचन बिहसा दससीसा।
जौं असि मति सहाय कृत कीसा॥२॥

उनके (आपके भाई के) वचन सुनकर वे (श्री राम जी) समुद्र से राह माँग रहे हैं, उनके मन में कृपा भरी है (इसलिए वे उसे सोखते नहीं)। दूत के वचन सुनकर रावण खूब हँसा [और बोला—] जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी बुद्धि है, तभी तो वानरों को सहायक बनाया है ॥२॥

सहज भीरु कर वचन दृढ़ाई ।
सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ।
रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥३॥

स्वाभाविक ही डरपोक विभीषण के वचन को प्रमाण करके उन्होंने समुद्र से मचलना (बालहठ) ठाना है। अरे मूर्ख ! झूठी बड़ाई क्या करता है ? बस, मैंने शत्रु 'राम' के बल और बुद्धि की थाह पा ली ॥३॥

सचिव सभीत बिभीषन जाकें ।
बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी ।
समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥४॥

जिसका विभीषण जैसा डरपोक मन्त्री हो, उसे जगत् में विजय और विभूति 'ऐश्वर्य' कहां ? दुष्ट रावण के वचन सुनकर दूत को क्रोध बढ़ आया । उसने मौका समझकर पत्रिका निकाली ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामानुज दीनी यह पाती।
नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन।
सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥५॥

'और कहा' श्री राम जी के छोटे भाई लक्ष्मण ने यह पत्रिका दी है। हे नाथ ! इसे बँचवाकर छाती ठण्डी कीजिए। रावण ने हँस कर उसे बायें हाथ से लिया और मन्त्री को बुलवा कर वह मूर्ख उसे बँचाने लगा ॥५॥

दो०–बातन्ह मनहि रिझाइ सठ।
जनि घालसि कुल खीस ॥
राम बिरोध न उबरसि।
सरन बिष्नु अज ईस ॥ ५६ (क) ॥

'पत्रिका में लिखा था—' अरे मूर्ख ! केवल बातों से ही मन को रिझा कर अपने कुल को नष्ट-भ्रष्ट न कर। श्री रामजी से विरोध करके तू विष्णु, ब्रह्मा और महेश की शरण में जाने पर भी नहीं बचेगा ॥५६ 'क' ॥

की तजि मान अनुज इव।
प्रभु पद पंकज भृंग ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होहि कि राम सरानल।
खल कुल सहित पतंग॥ ५६ (ख)॥

या तो अभिमान छोड़ कर अपने छोटे भाई विभीषण की भांति प्रभु के चरण-कमलों का भ्रमर बन जा। अथवा रे दुष्ट! श्री राम जी के बाणरूपी अग्नि में परिवार सहित पतिंगा हो जा 'दोनों में से जो अच्छा लगे सो कर' ॥५६ 'ख'॥

चौ०—सुनत सभय मन मुख मुस्काई।
कहत दसानन सबहि सुनाई॥
भूमि परा कर गहत अकासा।
लघु तापस कर बाग विलासा॥१॥

पत्रिका सुनते ही रावण भयभीत हो गया; परन्तु मुख से 'ऊपर से' मुस्कराता हुआ वह सबको सुनाकर कहने लगा—जैसे कोई पृथ्वी पर पड़ा हुआ हाथ से आकाश को पकड़ने की चेष्टा करता हो, वैसे ही यह छोटा तपस्वी 'लक्ष्मण' वाग्विलास करता है 'डींग हाँकता है' ॥१॥

कह सुक नाथ सत्य सब बानी।
समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा ।
नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥२॥

शुक 'दूत' ने कहा—हे नाथ ! अभिमानी स्वभाव को छोड़ कर 'इस पत्र में लिखी' सब बातों को सत्य समझिये। क्रोध छोड़ कर मेरा वचन सुनिये। हे नाथ ! श्री राम जी से वैर त्याग दीजिए ॥२॥

अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ।
जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही ।
उर अपराध न एकउ धरिही ॥३॥

यद्यपि श्री रघुवीर समस्त लोकों के स्वामी हैं, पर उनका स्वभाव अत्यन्त ही कोमल है। मिलते ही प्रभु आप पर कृपा करेंगे और आपका एक भी अपराध वे हृदय में नहीं रखेंगे ॥३॥

जनकसुता रघुनाथहि दीजे ।
एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
जब तेहिं कहा देन बैदेही ।
चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥४॥

जानकी जी श्री रघुनाथ जी को दे दीजिए। हे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभु ! इतना कहना मेरा कीजिए। जब उस 'दूत' ने जानकी जी को देने के लिये कहा, तब दुष्ट रावण ने उसको लात मारी ॥४॥

नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ।
कृपा सिन्धु रघुनायक जहाँ॥
करि प्रनाम निज कथा सुनाई।
राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥५॥

वह भी 'विभीषण की भांति' चरणों में सिर नवाकर वहीं चला, जहाँ कृपा सागर श्री रघुनाथ जी थे। प्रणाम करके उसने अपनी कथा सुनायी और श्री रामजी की कृपा से अपनी गति 'मुनि का स्वरूप' पाई ॥५॥

रिषि अगस्ति की साप भवानी।
राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी॥
बन्दि राम पद बारहिं बारा।
मुनि निज आश्रम कहुँ पगधारा ॥६॥

'शिवजी कहते हैं—' हे भवानी ! वह ज्ञानी मुनि था, अगस्त्य ऋषि के शाप से राक्षस हो गया था। बार-बार श्री राम जी के चरणों की वन्दना करके वह मुनि अपने आश्रम को चला गया ॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—बिनय न मानत जलधि जड़।
गए तीनि दिन बीति॥
बोले राम सकोप तब।
भय बिनु होई न प्रीति॥५७॥

इधर तीन दिन बीत गये, किन्तु जड़ समुद्र विनय नहीं मानता। श्री राम जी क्रोध सहित बोले—बिना भय के प्रीति नहीं होती! ॥५७॥

चौ०—लछिमन बान सरासन आनू।
सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती।
सहज कृपन सन सुन्दर नीती॥१॥

हे लक्ष्मण! धनुष-बाण लाओ, मैं अग्नि बाण से समुद्र को सोख डालूं। मूर्ख से विनय, कुटिल के साथ प्रीति, स्वाभाविक ही कंजूस से सुन्दर नीति (उदारता का उपदेश); ॥१॥

ममता रत सन ग्यान कहानी।
अति लोभी सन बिरति बखानी॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा।
ऊसर बीज बएँ फल जथा॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ममता में फँसे हुए मनुष्य को ज्ञान की कथा, अत्यन्त लोभी से वैराग्य का वर्णन, क्रोधी से शम (शान्ति) की बात और कामी से भगवान की कथा, इनका वैसा ही फल होता है जैसा ऊसर में बीज बोने से होता है (अर्थात ऊसर में बीज बोने की भांति यह सब व्यर्थ जाता है) ॥२॥

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।
यह मत लछिमन के मन भावा॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला।
उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥३॥

ऐसा कहकर श्री रघुनाथ जी ने धनुष चढ़ाया। यह मत लक्ष्मण जी के मन को बहुत अच्छा लगा। प्रभु ने भयानक [अग्नि] बाण सन्धान किया, जिससे समुद्र के हृदय के अन्दर अग्नि की ज्वाला उठी ॥३॥

मकर उरग झष गन अकुलाने।
जरत जंतु जलनिधि जब जाने॥
कनक थार भरि मनिगन नाना।
बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥४॥

मगर, सांप तथा मछलियों के समूह व्याकुल हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गए। जब समुद्र ने जीवों को जलते जाना, तब सोने के थालों में अनेक मणियों (रत्नों) को भर कर अभिमान छोड़ कर वह ब्राह्मण के रूप में बाहर आया ॥४॥

दो०-काटेंहि पइ कदरी फरइ।
कोटि जतन कोउ सींच॥
बिनय न मान खगेस सुनु।
डाटेहिं पइ नव नीच ॥५८॥

(काकभुशुण्डि जी कहते हैं—) हे गरुड़ जी! सुनिये, चाहे कोई करोड़ों उपाय करके सींचे, पर केला तो काटने पर ही फलता है। नीच विनय से नहीं मानता, वह डांटने पर ही झुकता है (रास्ते पर आता है) ॥५८॥

चौ०-सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे।
छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥
गगन समीर अनल जल धरनी।
इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥१॥

समुद्र ने भयभीत होकर प्रभु के चरण पकड़ कर कहा-हे नाथ! मेरे सब अवगुण (दोष) क्षमा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कीजिए। हे नाथ! आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी—इन सबकी करनी स्वभाव से ही जड़ है ॥१॥

तव प्रेरित मायाँ उपजाए।
सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई।
सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥२॥

आपकी प्रेरणा से माया ने इन्हें सृष्टि के लिए उत्पन्न किया है, सब ग्रन्थों ने यही गाया है। जिसके लिए स्वामी की जैसी आज्ञा है, वह उसी प्रकार से रहने में सुख पाता है ॥२॥

प्रभु भल कीन्हि मोहि सिख दीन्ही।
मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही॥
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी ॥३॥

प्रभु ने अच्छा किया जो मुझे शिक्षा (दण्ड) दी; किन्तु मर्यादा [जीवों का स्वभाव] भी आपकी ही बनायी हुई है। ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और स्त्री—ये सब दण्ड के अधिकारी हैं ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।
उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई।
करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई॥४॥

प्रभु के प्रताप से मैं सूख जाऊँगा और सेना पार उतर जाएगी, इसमें मेरी बड़ाई नहीं है [मेरी मर्यादा नहीं रहेगी] तथापि प्रभु की आज्ञा अपेल है [अर्थात आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं हो सकता] ऐसा वेद गाते हैं। अब आपको जो अच्छा लगे, मैं तुरन्त वही करूँ॥४॥

दो०—सुनत बिनीत बचन अति।
कह कृपाल मुसुकाइ॥
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु।
तात सो कहहु उपाइ॥५९॥

समुद्र के अत्यन्त विनीत वचन सुन कर कृपालु श्री राम जी ने मुस्करा कर कहा—हे तात! जिस प्रकार वानरों की सेना पार उतर जाए। वह उपाय बताओ॥५९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौ०—नाथ नील नल कपि द्वौ भाई।
लरिकाईं रिषि आसिष पाई॥
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे।
तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥१॥

[समुद्र ने कहा--] हे नाथ! नील और नल दो वानर भाई हैं। उन्होंने लड़कपन में ऋषि से आशीर्वाद पाया था। उनके स्पर्श कर लेने से ही भारी-भारी पहाड़ भी आपके प्रताप से समुद्र पर तैर जायेंगे॥१॥

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई।
करिहउँ बल अनुमान सहाई॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ।
जेहिं यह सुजसु लोक तिहुं गाइअ॥२॥

मैं भी प्रभु की प्रभुता को हृदय में धारण कर अपने बल के अनुसार [जहाँ तक मुझसे बन पड़ेगा] सहायता करूँगा। हे नाथ! इस प्रकार समुद्र को बंधाइए, जिससे तीनों लोकों में आपका सुन्दर यश गाया जाए॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एहिं सर मम उत्तर तट बासी।
हतहु नाथ खल नर अघरासी॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा।
तुरतहिं हरी राम रनधीरा॥३॥

इस बाण से मेरे उत्तर तट पर रहने वाले पाप के राशि दुष्ट मनुष्यों का वध कीजिए। कृपालु और रणधीर श्री राम जी ने समुद्र के मन की पीड़ा सुन कर उसे तुरन्त ही हर लिया [अर्थात बाण से उन दुष्टों का वध कर दिया) ॥३॥

देखि राम बल पौरुष भारी।
हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा।
चरन बन्दि पायोधि सिधावा॥४॥

श्री राम जी का भारी बल देखकर समुद्र हर्षित होकर सुखी हो गया। उसने उन दुष्टों का सारा चरित्र प्रभु को कह सुनाया। फिर चरणों की वंदना करके समुद्र चला गया ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छं०—निज भवन गवनेउ सिन्धु।
श्री रघुपतिहि यह मत भायऊ॥
यह चरित कलि मलहर।
जथामति दास तुलसी गायऊ॥
सुख भवन संसय समन दवन।
विषाद रघुपति गुन गना॥
तजि सकल आस भरोस गावहि।
सुनहि संतत सठ मना॥

समुद्र अपने घर चला गया, श्री रघुनाथ जी को यह मत (उसकी सलाह) अच्छा लगा। यह चरित्र कलयुग के पापों को हरने वाला है, इसे तुलसीदास ने अपनी बुद्धि के अनुसार गाया है। श्री रघुनाथ जी के गुण समूह सुख के धाम, सन्देह का नाश करने वाले और विषाद का दमन करने वाले हैं। अरे मूर्ख मन! तू संसार का सब आशा-भरोसा त्यागकर निरंतर इन्हें गा और सुन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो०—सकल सुमङ्गल दायक।
रघुनायक गुन गान॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव।
सिन्धु बिना जलजान॥

श्री रघुनाथजी का गुणगान सम्पूर्ण सुन्दर मङ्गलों का देने वाला है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे वे बिना किसी जहाज (अन्य साधन) के ही भवसागर को तर जायेंगे ।।६०।।

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने पंचमः सोपानः समाप्तः।

कलयुग के समस्त पापों का नाश करने वाले श्री रामचरित मानस का यह पाँचवां सोपान समाप्त हुआ।

।। सुन्दरकाण्ड समाप्त ।।

—::०::—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh